Career Companion
A future begins here ...

नई शिक्षा नीति पर आधारित

# सामाजिक चेतना एवं पर्यावरण

Teacher's Manual

Class 7

Written by :
Author's Team
(Vidyalaya Prakashan)

Career Companion
A future begins here ...

A Unit of Vidyalaya Prakashan
An ISO 9001 : 2008 Certified Co.
● New Delhi ● Meerut

# INDEX


| Sl. No. | Book Name | Page No. |
|---|---|---|
| 1. | भूगोल | 3 |
| | इतिहास | 27 |
| | नागरिक शास्त्र | 57 |

## पाठ-1 : हमारा पर्यावरण

**क. सही विकल्प पर सही ( ✓ ) का चिह्न लगाओ-**

1. जीवों तथा अजीवों का समूह
2. (अ) एवं (ब) दोनों
3. जैविक और अजैविक पारिस्थितिकी
4. ये सभी
5. 30 किमी०

**ख. रिक्त स्थान भरो -**

1. इकोस्फीयर
2. आदिमानव
3. जलमण्डल
4. लगभग 1600 किमी०
5. भूपटल
6. पेड़-पौधे, जीव जन्तु

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-**

1. ✓
2. ✓
3. ✓
4. ✗
5. ✓

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. जीव, समुदाय या वस्तुओं के संपर्क मे आने वाली सजीव एवं निर्जीव दशाएँ अथवा वस्तुएँ 'पर्यावरण' कहलाती हैं।
2. पर्यावरण के निम्नलिखित घटक हैं-
   1. प्राकृतिक घटक
   2. सांस्कृतिक घटक
   3. मानवीय घटक
3. जैवमण्डल को इकोस्फीयर भी कहते है। यह बहुत ही संकीर्ण परिमण्डल है। इसमे स्थलमण्डल, वायुमण्डल, और जलमण्डल के परस्पर मिलने वाले भाग सम्मिलित हैं।
4. आपके सिर के ऊपर वायु का एक महासागर है जो अंतरिक्ष मे लगभग 1600 किमी० तक फैला हुआ है। इसी वायु के महासागर को वायुमण्डल कहते हैं।
5. पर्यावरण के तीन प्रकार के नाम निम्नलिखित है-
   1. प्राकृतिक घटक
      - क. स्थलमण्डल
      - ख. वायुमण्डल
      - ग. जलमण्डल
      - घ. जैवमण्डल
   2. सांस्कृतिक घटक
   3. मानवीय घटक

**ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. **जैविक पारिस्थितिकी :** इनमें पेड़-पौधे, मनुष्य सहित जीव-जंतु एवं सूक्ष्म जीव सम्मिलित होते हैं। सभी सजीवों को जीवित रहने हेतु ऊर्जा की आवश्यकता है। इस ऊर्जा का प्रयोग ये अपने मूलभूत कार्यों को करने हेतु करते हैं। यह ऊर्जा उनको उस भोजन से प्राप्त होती है जो वे खाते हैं। परंतु यह भोजन वापस हरे-भरे पौधों की ओर संकेत करता है। इससे स्पष्ट होता है कि जीव कैसे पौधों पर निर्भर करते हैं। भोजन बनाने के लिए पौधों को जिस कार्बन-डाइऑक्साइड की आवश्यकता पड़ती है वह अधिकांशतः उन्हें सजीवों से प्राप्त होती है। इस प्रकार पौधे भी सजीवों पर निर्भर करते हैं।

2. सजीव, पेड़-पौधें, जीव-जंतु विविध वातावरण बनाते हैं। ध्रुवों से भूमध्य रेखा तक भूतल, भूगर्भ, वायु, जल में एवं स्थल पर जीवन पाया जाता है। वह स्थल, जहाँ जीवों का एक समुदाय निर्जीव पर्यावरण के साथ मिलकर प्रभावित होता है पारिस्थितिकी तंत्र कहलाता है। एक पारिस्थितिकी तंत्र एक तालाब जितना छोटा, या बाग जितना और या फिर जंगल या महासागर जितना बड़ा हो सकता है। एक तालाबीय पारिस्थितिकी तंत्र में बहुत ही छोटे पौधे, जैसे-हरे शैवाल, एवं बहुत ही छोटे जीव, जैसे-किरीट एवं अरित्रपाद हो सकते हैं। एक जंगली पारिस्थितिकी तंत्र के अंतर्गत आपको अति सूक्ष्म जीव, लघु जीव, दीर्घ जीव, जैसेः- लोमड़ियाँ, चिड़ियाँ, कीट-पतंगे आदि मिल सकते हैं।

3. **जैवमण्डल** – जैवमण्डल को इकोस्फीयर भी कहते हैं। यह बहुत ही संकीर्ण परिमण्डल है। इसमें स्थलमण्डल, वायुमण्डल और जलमण्डल के परस्पर मिलने वाले भाग सम्मिलित हैं। इसमें समस्त जीवधारी (वनस्पति तथा प्राणी) निवास करते हैं।

**च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –**

1. जीव, समुदाय या वस्तुओं के संपर्क में आने वाली सजीव एवं निर्जीव दशाएँ अथवा वस्तुएँ 'पर्यावरण' कहलाती हैं। पर्यावरण की सभी सजीव एवं निर्जीव वस्तुएँ परस्पर निर्भर होती हैं। संजीव एवं निर्जीव वस्तुओं में स्थान, लोग, वस्तुएँ एवं प्रकृति सम्मिलित होते हैं जो सजीव जीवों को घेरे रहते हैं।

**पर्यावरण के घटक**

**1. प्राकृतिक घटक** – प्राकृतिक घटकों में वायु, जल, स्थल, धूप आदि को सम्मिलित किया जाता है। वायु से वायुमण्डल का निर्माण होता है।

क. स्थलमण्डल – यह शैल-पदार्थों से निर्मित पृथ्वी की परत

है। यह हमारे लिए बहुत ही लाभदायक है। यह मनुष्य को रहने के लिए भूमि तथा पेड़-पौधों को खाने के लिए मृदा प्रदान करता है। यह हमें अनेक खनिज प्रदान करता है, जो हमारे आर्थिक विकास में सहायक है।

ख. वायुमण्डल – आपके सिर के ऊपर वायु का एक महासागर है जो अंतरिक्ष में लगभग 1600 किमी० तक फैला हुआ है। इसी वायु के महासागर को वायुमण्डल कहते हैं। दो गैसें – नाइट्रोजन एवं आक्सीजन मिलकर अकेले ही 99 प्रतिशत वायुमण्डल के परिमाण का निर्माण करती हैं। वायु का लगभग 78 प्रतिशत भाग नाइट्रोजन एवं 21 प्रतिशत भाग ऑक्सीजन है। शेष भाग अन्य गैसों- आर्गन, कार्बन डाइऑक्साइड, नीऑन, हीलियम एवं आर्द्रता से बना है।

ग. जलमण्डल – पृथ्वी की सतह पर पायी जाने वाली सभी जलराशियाँ, जलमण्डल कहलाती हैं। इसके अन्तर्गत सागरों, समुद्रों, नदियों, हिमखण्डों, झीलों, खाड़ियों आदि को सम्मिलित किया जाता है।

घ. जैवमण्डल – जैवमण्डल को इकोस्फीयर भी कहते हैं। यह बहुत ही संकीर्ण परिमण्डल है। इसमें स्थलमण्डल, वायुमण्डल और जलमण्डल के परस्पर मिलने वाले भाग सम्मिलित हैं। इसमें समस्त जीवधारी (वनस्पति तथा प्राणी) निवास करते हैं। इस परत की मोटाई

**2. सांस्कृतिक घटक** – प्राकृतिक घटक का उपयोग करके मानव निर्मित घटक का निर्माण करता है। उदाहरण के लिये- वह जंगलों को काटकर कृषि भूमि प्राप्त करता है।

**3. मानवीय घटक** – आदिमानव ने स्वयं को प्राकृतिक पर्यायवरण के अनुकूल कर लिया था। वह सादा जीवन व्यतीत करता था तथा अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति प्रकृति से किया करता था।

2. **जैवमण्डल** – जैवमण्डल को इकोस्फीयर भी कहते है। यह बहुत ही संकीर्ण परिमण्डल है। इसमे स्थलमण्डल, वायुमण्डल और जलमण्डल के परस्पर मिलने वाले भाग सम्मिलित है। इसमे समस्त जीवधारी (वनस्पति तथा प्राणी) निवास करते है। इस परत की मोटाई लगभग 30 किमी० तक होती है। अधिकांश जीवन स्थल या महासागरों की ऊपरी सतह पर केन्द्रित होता है क्योंकि यहाँ पर ही जीवन के लिये आवश्यक वायु प्राप्त होती है। महासागरों की निचली सतह पर वायु का घनत्व कम हो जाता है।

**जैवमण्डल मे परस्पर निर्भरता** – प्राय: किसी क्षेत्र के

वनस्पतिय विकास पर वहाँ का जीव स्तर निर्भर करता है। कि वहाँ पर किस प्रकार के जीव रहते है। वनस्पतिय जीवन वहाँ की जलवायु पर निर्भर होता है। उदाहरण के लिये- जिस स्थान पर गर्म एवं वर्षा वाली जलवायु होती है, वहाँ पर वृक्ष ऊँचे एवं घने उगते है।

**छ. निम्नलिखित में अन्तर बताइए-**

1. **जैविक पारिस्थितिकी :** इनमें पेड़-पौधे, मनुष्य सहित जीव-जंतु एवं सूक्ष्म जीव सम्मिलित होते हैं। सभी सजीवों को जीवित रहने हेतु ऊर्जा की आवश्यकता है। इस ऊर्जा का प्रयोग ये अपने मूलभूत कार्यों को करने हेतु करते हैं। यह ऊर्जा उनको उस भोजन से प्राप्त होती है जो वे खाते हैं। परंतु यह भोजन वापस हरे-भरे पौधों की ओर संकेत करता है। इससे स्पष्ट होता है कि जीव कैसे पौधों पर निर्भर करते हैं। भोजन बनाने के लिए पौधों को जिस कार्बन-डाइऑक्साइड की आवश्यकता पड़ती है वह अधिकांशतः उन्हें सजीवों से प्राप्त होती है। इस प्रकार पौधे भी सजीवों पर निर्भर करते हैं।

   **अजैविक पारिस्थितिकी :** अजैविक पारिस्थितिकी दो प्रकार की होती हैं-माध्यम या पर्यावरण वह माध्यम जिसमें जीव या अवयव रहता है एवं जलवायु वह जो उसको चारों ओर से घेरे रखती है। पर्यावरण में मिट्टी, जल एवं वायु सम्मिलित होते हैं। जलवायु में रोशनी, तापमान, वर्षा, आर्द्रता, पवनें इत्यादि सम्मिलित हैं।

2. जीव, समुदाय या वस्तुओं के संपर्क में आने वाली सजीव एवं निर्जीव दशाएँ अथवा वस्तुएँ पर्यावरण कहलाती हैं। सजीव, पेड़-पौधें, जीव-जंतु विविध वातावरण बनाते हैं। ध्रुवों से भूमध्य रेखा तक भूतल, भूगर्भ, वायु, जल में एवं स्थल पर जीवन पाया जाता है। वह स्थल, जहाँ जीवों का एक समुदाय निर्जीव पर्यावरण के साथ मिलकर प्रभावित होता है पारिस्थितिकी तंत्र कहलाता है। एक पारिस्थितिकी तंत्र एक तालाब जितना छोटा, या बाग जितना और या फिर जंगल या महासागर जितना बड़ा हो सकता है। एक तालाबीय पारिस्थितिकी तंत्र में बहुत ही छोटे पौधे, जैसे-हरे शैवाल, एवं बहुत ही छोटे जीव, जैसे-किरीट एवं अरित्रपाद हो सकते हैं। एक जंगली पारिस्थितिकी तंत्र के अंतर्गत आपको अति सूक्ष्म जीव, लघु जीव, दीर्घ जीव, जैसेः- लोमड़ियाँ, चिड़ियाँ, कीट-पतंगे आदि मिल सकते हैं।

3. **स्थलमण्डल** - यह शैल-पदार्थों से निर्मित पृथ्वी की परत है। यह हमारे लिए बहुत ही लाभदायक है। यह मनुष्य को रहने के लिए भूमि तथा पेड़-पौधों को खाने के लिए मृदा प्रदान करता है। यह हमें अनेक खनिज प्रदान करता है, जो हमारे आर्थिक

विकास में सहायक है।

**जलमण्डल** – पृथ्वी की सतह पर पायी जाने वाली सभी जलराशियाँ, जलमण्डल कहलाती हैं। इसके अन्तर्गत सागरों, समुद्रों, नदियों, हिमखण्डों, झीलों, खाड़ियों आदि को सम्मिलित किया जाता है। सागरीय जल स्थलमण्डल और वायुमण्डल में चक्कर लगाता रहता है। तरंगें, लहरें तथा ज्वार-भाटा –विभिन्न प्रकार की सागरीय जल की गतियाँ हैं।

## पाठ–2 : बदलती पृथ्वी

**क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–**

1. ये सभी
2. भूकंपीय तरंगों में
3. हिमालय
4. सक्रिय ज्वालामुखी का
5. निष्क्रिय ज्वालामुखी का

**ख. रिक्त स्थान भरो –**

1. स्थलमण्डलीय प्लेटे भी
2. विवर्तनिक
3. यूरेशिया, भारतीय
4. अधिकेन्द्र
5. माउट फ्यूजियामा और इटली का माउंट वेसुवियस

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–**

1. ✓
2. ✓
3. ✓
4. ✗
5. ✓

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. पृथ्वी की पर्पटी एक परत से निर्मित नही है वरन् इसका निर्माण विभिन्न परतों से हुआ है। उनमे कुछ बडी तो कुछ बडी तो कुछ छोटी परतें होती हैं। इन परतों को स्थलमण्डलीय प्लेटें भी कहा जाता है।
2. वह बल जो पृथ्वी से उत्पन्न होते है अथवा जो बल पृथ्वी के अन्दर से कार्य करते है उन्हे अंतर्जनित बल कहते है।
3. अंतर्जनित बल को विपरित बहिर्जनित बल पृथ्वी के ऊपरी धरातल से कार्य करते हैं अथवा पृथ्वी के धरातल से पैदा होते हैं, बहिर्जनित बल कहलाते है। जैसे– भूकंप, ज्वालामुखी आदि।
4. जब स्थलीय प्लेटें खिसकती है तो पृथ्वी की सतह पर अचानक कंपन होता है उसे भूकंप कहते है।
5. प्रशांत महासागर के चारों ओर का क्षेत्र अग्नि वलय कहलाता

है।

6. द्वितीयक तरंगे प्राथमिक तरंगो के बाद उत्पन्न होती हैं। इनकी गति प्राथमिक तरंगो की गति से कम होती है। ये तरंगे एक प्रबल कंपन उत्पन्न करती है। ये तरल दिशा क्षेत्र से होकर नही गुजरती हैं।

**ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. जब दो प्लेटें आपस में जोर से कड़ककर जुड़ती हैं तो इसको अभिसारी गति कहते हैं। इस प्रकार की गति में पर्पटी बीच में से दब जाती है तथा उसके ऊपर मोड़ पड़ जाते हैं जिससे वलित पर्वत बन जाते हैं। जब दो महासागरीय प्लेटें मिलती हैं और एक प्लेट नीचे दब जाती है तो मैग्मा वहाँ बने अंतर (खाली जगह) से ऊपर आने लगता है और ज्वालामुखी का निर्माण होता है। यदि एक महासागरीय प्लेट और एक महाद्वीपीय प्लेट टकराती हैं तब महासागरीय प्लेट के तले खिसक जाते हैं। हिमालय की उत्पत्ति यूरेशिया की प्लेट और भारतीय प्लेट के आपस में टकराने से हुई थी।

   दक्षिणी अमेरिका में एंडीज पर्वत श्रेणियाँ इन्हीं बल, शक्तियों तथा प्रक्रियाओं द्वारा जिनमें महासागरीय प्लेट दक्षिण अमेरिकी प्लेट के नीचे दब गई थीं, द्वारा उत्पन्न हुई थी।

2. अंतर्जनित बलों के कारण पृथ्वी पर भूकंप, ज्वालामुखी, भू-स्खलन, चट्टानों व पर्वतों का निर्माण होता है।

3. जब स्थलीय प्लेटें खिसकती हैं तो पृथ्वी की सतह पर अचानक कंपन होता है उसे भूकंप कहते हैं। जब प्लेटों के सिरे आपस में जुड़ जाते हैं तो दबाव उत्पन्न होता है, फिर अचानक यह दबाव निकल जाता है जिससे पृथ्वी में कंपन होने लगता है। यह स्पंदन अचानक हुई गति के कारण उत्पन्न होता है जिसे भूकंप कहते हैं। यह एक विशाल स्थान से होकर गुजरता है जिन्हें भूकंपीय तरंगे कहते हैं।

4. जब जल के नीचे भूकंप आता है तब इसके कारण बहुत ही तीव्र तरंगें उत्पन्न होती हैं जो सुनामी तरंगें कहलाती हैं। जल के नीचे के भूकंप सागर के पानी को छिन्न-भिन्न कर देते हैं तथा ये सागरीय जल तटीय स्थलों की ओर चोट करते हैं। यह बेहद विनाशकारी होता है और तटीय जन-धन को भारी नुकसान पहुँचाता है।

**च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –**

1. ज्वालामुखी पृथ्वी की पर्पटी पर खुला एक मुख होता है जिससे पिघला मैग्मा, गैसें विस्फोट के साथ तेजी से बाहर निकलती हैं।

विस्फोट धमाकेदार या शांत हो सकता है और मैग्मा पृथ्वी की सतह पर पहुँच जाता है। पृथ्वी की सतह पर पहुँचने के बाद मैग्मा को नया नाम, लावा मिलता है। ज्वालामुखी का खुला मुख एक पाईप की भाँति दिखाई देता है और निकास (वेंट) कहलाता है। यह लावा ठंडा होता है और निकास के चारों ओर एकत्रित हो जाता है तथा कीप के आकार की एक शंक्वाकार पहाड़ी या पर्वत का निर्माण करता है तथा ऊपर का खुला भाग क्रेटर कहलाता है।

2. **ज्वालामुखी के प्रकार :** विस्फोट की आवृत्ति के आधार पर ज्वालामुखियों को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया है –

**सक्रिय ज्वालामुखी :** वे ज्वालामुखी जो निरंतर सक्रिय रहते हैं और लगातार लावा, गैस, राख उगलते रहते हैं सक्रिय ज्वालामुखी कहलाते हैं, इन्हें जीवित ज्वालामुखी भी कहते हैं। माउंट एटना एवं स्ट्रोमबोली सक्रिय ज्वालामुखी है।

**सुशुप्त ज्वालामुखी :** वे ज्वालामुखी जिनमें लंबे समय से विस्फोट नहीं हुआ है सुशुप्त ज्वालामुखी कहलाते हैं। इन्हें सोते हुए ज्वालामुखी भी कहते हैं। कभी-कभी ये हजारों वर्षों तक अक्रिय रहते हैं। माउंट हुड, माउंट बेकर एवं निसीरोस सुशुप्त ज्वालामुखियों के उदाहरण हैं।

**निष्क्रिय ज्वालामुखी :** वे ज्वालामुखी जिनमें हजारों वर्षों से विस्फोट नहीं हुआ, व आगे भी उनके सक्रिय होने की संभावना नहीं है और वे अब भी सक्रिय नहीं हैं। निष्क्रिय ज्वालामुखी कहलाते हैं। इन ज्वालामुखियों को मृत ज्वालामुखी भी कहते हैं।

## पाठ-3 : प्रमुख स्थल-रूप

**क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-**

1. ये दोनों
2. जल का जमना
3. ये सभी
4. पतला तल
5. जॉर्ज

**ख. रिक्त स्थान भरो -**

1. बहिर्जनित
2. धरातलीय, आधार भाग
3. बरचन
4. बाढ़कृत
5. जोगयोगरसोप्पा

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-**

1. ✓
2. ✓

3. ✓ 4. ✓

5. ✓

**घ. मिलान करो –**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | बहता जल | अ. | V–आकृति की घाटियाँ |
| 2. | पवन | ब. | लोएस |
| 3. | बड़े मोड़ | स. | विसर्प |
| 4. | समुद्री लहरें | द. | समुद्र चाप |
| 5. | हिमनद | य. | हिमोढ़ |

**ङ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. रासायनिक अपक्षय चट्टानों के रासायनिक गुणों मे होने वाले परिवर्तन को कहते है। रासायनिक अपक्षय के अंतर्गत नए खनिजों का निर्माण होता है। जिनमे चट्टानों का जल्दी क्षय हो जाता है।

2. बालू टिब्बे की उत्पत्ति शक्तिशाली पवनों के कारण होती है। इनकी आकृतियाँ पवनों की दिशानुसार परिवर्तित होती रहती हैं। जब ये चाप की आकृति मे होते है तो इन्हे बरचन कहते है।

3. जब पवनों की गति धीमी होती है अथवा इसके रास्ते मे रुकावटें जैसे पेड, जंगल, इमारतें आदि आती है तो पवनों का निक्षेपण कार्य प्रारम्भ हो जाता है। बालू के उत्तम कण विस्तृत क्षेत्र मे निक्षेपित हो जाते है, तो इसे लोएस कहते है।

4. प्राथमिक अवस्था (युवावस्था) मे, नदी बहुत तीव्र वेग से सँकरी नहरों मे बहती है और किनारों का अपरदन करती है जिससे V –आकार की घाटियों का निर्माण होता है। अधिकतम कटान की घाटियों को जार्ज अथवा घाटियाँ कहते हैं।

5. समुद्री किनारे प्रायः शांत एवं धीमी समुद्री लहरों के कारण ही बनते हैं।

6. कभी–कभी तट एवं रेती के बीच मे समुद्री जल इकट्ठा हो जाता है। यह समुद्री जल एक झील का निर्माण करता है जिसे लैगून कहते है।

**च. लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. मैदानी क्षेत्रों में पवनों का कार्य धरातल के घर्षण के कारण धीमी गति से होता है। सामान्यतः इनकी ऊँचाई लगभग 80 सेमी० ही रहती है। पवनें चट्टानों के धरातलीय या आधार भाग का अधिक अपरदन करती हैं जिस कारण चट्टानों की चोटी चौड़ी होती हैं एवं आधार पतला रहता है। इस प्रकार की चट्टानों को छत्रक चट्टानें कहते हैं।

2. मध्य अवस्था में, स्थल के ढलान बहुत खड़े ढाल वाले नहीं होते इसलिए नदियों का वेग धीमा हो जाता है। अब नदियाँ चट्टानों के भारी कणों को एकत्रित करना आरम्भ कर देती हैं। घाटियाँ चौड़ी व बड़ी हो जाती हैं। नदी जैसे ही मैदानी भागों में प्रवेश करती है वह विसर्प व बड़े मोड़ बनाती है जिन्हें विसर्पण कहते हैं। इसी बीच में, विसर्पण अपरदन एवं किनारे पर एकत्रिकरण के कारण और अधिक चौड़े हो जाते हैं। विसर्पण के बीच में एकत्रण से बना समतल स्थल बाढ़कृत मैदान कहलाता है।

3. समुद्री लहरें बहुत बड़ी होती हैं इसलिए ये जल को बाहर फेंकती हैं। समुद्र तल पर लहरों की उत्पत्ति पवनों की क्रिया के कारण होती है यहीं पवनें तटीय स्थलों की आकृति को आकार देती है। शक्तिशाली समुद्री लहरें तट से टकराती हैं और चट्टानों को खंडों में तोड़ देती हैं। जिससे चट्टानों में बहुत-सी दरारें व अंतर विकसित हो जाते हैं। कुछ समय बाद बीच का यह अंतर या रिक्त स्थान बड़ा होता जाता है और एक बड़ी गुफा का निर्माण होता है। जब समुद्री लहरें निरंतर चट्टान के दोनों ओर से टकराती रहती हैं तो चट्टान में आर-पार का रास्ता बन जाता है जिसको समुद्री चाप कहते हैं। जब समुद्री चाप की छत अपरदित हो जाती है तो वह ढह जाती है तथा मात्र चट्टानों के स्तम्भ खुले जल में शेष रह जाते हैं। इन स्तम्भों को 'स्टैक (ढेर) कहते हैं।

**च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -**

1. हिमनद चट्टानों के टुकड़ों को ले जाते हैं और एक अभिकर्ता का कार्य करते हैं। जब ये हिमनद किसी घाटी से गुजरते हैं, तो पर्वतों से लाए गए चट्टानों के टुकड़े घाटी में रह जाते हैं। पर्वतीय हिमनद के द्वारा लाए गए पदार्थ घाटियों के तत्व में एकत्रित हो जाते हैं और हिमनद हिमोढ़ कहलाते हैं।

   जम्मू एवं कश्मीर की काराकोरम श्रृंखला में सियाचिन हिमनद ध्रुवीय क्षेत्र से बाहर का सबसे बड़ा हिमनद है। लगभग 99% हिमनद अंटार्कटिका और ग्रीनलैंड में पाए जाते हैं।

   हिमनद खड़ी ढाल के रूप में बडी घाटियों का निर्माण करते हैं जो अंग्रेजी के अक्षर 'U' के आकार की दिखाई देती है। ये घाटियाँ हिमनदों के गर्त कहलाती हैं। ये हिमनद एक पहाड़ के ढलान को तराशकर गहरी खाइयों का निर्माण करते हैं। यह एक अव्यवहारिक खड्ढे में विकसित हो जाती है जो गह्वर कहलाती है। जब हिमनद की बर्फ पिघलती है, तो गड्ढे पानी से भर

जाते हैं और झील का निर्माण करते हैं जो गिरिताल कहलाते हैं।

ध्रुवीय क्षेत्रों के हिमनदों की बर्फ की चादर की मोटाई हजारों मीटर होती हैं। कभी-कभी बर्फ के बड़े टुकड़े टूटकर समुद्र में बहकर आ जाते हैं जो हिमशैल कहलाते हैं।

हिमशैल बहुत बड़े होते हैं और पानी के जहाजों के लिए हानिकारक होते हैं।

2. अपक्षय सामान्यत: अपरदन से प्रभावित व अनुसरित होता है। इस प्रक्रिया में चट्टानों के टूटे तत्व मौलिक स्थान से अन्य स्थान पर गति करते हैं। अपरदन के मुख्य कारक हवा (पवन), बहता जल (नदी), समुद्री लहरें और बहता बर्फ (हिमनद) हैं।

**पवन का कार्य** – रेगिस्तानों, तटीय स्थलों व सूखे मैदानों में अपरदन का प्रमुख कारक पवन है। शक्तिशाली पवनें चट्टानों की चोटी के बजाए उसके आधार को ज्यादा जल्दी अपरदित करती हैं।

बालू टिब्बे बालू टिब्बे की उत्पत्ति शक्तिशाली पवनों के कारण होती है। इनकी आकृतियाँ पवनों की दिशानुसार परिवर्तित होती रहती हैं। जब ये चाप की आकृति में होते हैं तो इन्हें बरचन कहते हैं। जब पवनों की गति धीमी होती है अथवा इसके रास्ते में रूकावटें जैसे पेड़, जंगल, इमारतें आदि आती हैं तो पवनों का निक्षेपण कार्य प्रारम्भ हो जाता है। बालू के उत्तम कण विस्तृत क्षेत्र में निक्षेपित हो जाते हैं, तो इसे लोएस कहते हैं। लोएस उदाहरणत: चीन, अर्जेंटीना के पंपास क्षेत्रों व अमेरिका के मिस्सीसिप्पी क्षेत्रों में पाए जाते हैं। चट्टानों के कण तुलनात्मक रूप से भारी होते हैं अत: पवन इन्हें बहुत ऊँचाई तक उड़ाकर ले जाने में असमर्थ होती है। मैदानी क्षेत्रों में पवनों का कार्य धरातल के घर्षण के कारण धीमी गति से होता है। सामान्यत: इनकी ऊँचाई लगभग 80 सेमी० ही रहती है। पवनें चट्टानों के धरातलीय या आधार भाग का अधिक अपरदन करती हैं जिस कारण चट्टानों की चोटी चौड़ी होती हैं एवं आधार पतला रहता है। इस प्रकार की चट्टानों को छत्रक चट्टानें कहते हैं।

## पाठ-4 : जलमण्डल

**क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-**

1. 97%
2. ये दोनों
3. ये दोनों

**ख. रिक्त स्थान भरो –**

1. भूमण्डलीय
2. वर्ष 22 मार्च
3. उच्च ज्वार, उच्चतम और निम्न ज्वार निम्नतम लेता है।
4. भारी

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–**

1. ✗
2. ✓
3. ✗
4. ✓

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. पृथ्वी पर चार महासागर है–
   1. प्रशांत महासागर
   2. अटलांटिक महासागर
   3. आर्कटिक महासागर
   4. हिंद महासागर
2. जब चन्द्रमा धरती के नजदीक होता है। तब अधिक गुरुत्वाकर्षण बल के कारण उच्च ज्वार आता है। पूर्ण चन्द्रमा तथा नया चन्द्रमा होने पर जब सूर्य पृथ्वी और चन्द्रमा तीनों एक सीध में आ जाते हैं तब सूर्य और चन्द्रमा मिलकर गुरुत्वाकर्षण बल का प्रयास करते हैं इस प्रकार इस समय में उच्च ज्वार उच्चतम तो निम्न ज्वार निम्नतम होते हैं। यह अद्‌भुत घटना वृहत ज्वार कहलाती हैं।
3. महासागरीय जल के नियमित अंतराल पर दिन मे दो बार चढाव और उतार क्रमशः ज्वार–भाटा कहलाता है।
4. वायु के प्रभाव से समुद्र के जल के ऊपर–नीचे होने की क्रिया को लहरें या तरंगे कहते हैं।
5. जब उच्च ज्वार सामान्य से कम ऊँचे–नीचे होते हैं जिसका कारण सूर्य तथा चन्द्रमा की आकर्षण शक्ति का बढ़ना है तो ऐसे ज्वार निम्न ज्वार कहलाते हैं।

**ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. पृथ्वी पर स्थित विशाल भूखंड महाद्‌वीप कहे जाते हैं जिनके चारों ओर महासागर स्थित हैं। महासागर ऊर्जा एवं ऊष्मा के अनंत भंडार हैं। महासागरों से जल वायुमण्डल, वहाँ से स्थल और फिर महासागर में गमन करता है, इसे ही 'जलीय चक्र' कहा जाता है। जल–चक्र का न तो कोई प्रारम्भ होता है और न ही कोई अंत। यह निरंतर इसी प्रकार चलता रहता है।
2. पृथ्वी पर एक जल–बजट या भूमण्डलीय जल संतुलन है जिसमें वर्षण आय के समान है जबकि वाष्पीकरण और वाष्पोत्सर्जन व्यय है। महासागरों, नदियों, झीलों या तालाबों में विद्‌यमान जल

के ऊपर सूर्य की किरणें पड़ने से वाष्पीकरण होता है। पादप अपनी जड़ों द्वारा भूमि से जल ग्रहण करते हैं और अपनी पत्तियों द्वारा उसे जलवाष्प के रूप में पुनः वायु को दे देते हैं। पादपों की इस प्रक्रिया से जल वापस देने को वाष्पोत्सर्जन कहते हैं।

3. पृथ्वी पर जल के कई स्त्रोत जैसे- सागर, महासागर, झीलें और नदियाँ आदि। इन सभी को जलमण्डल कहते हैं। पृथ्वी की 71% सतह जल से घिरी है केवल 29% सतह ही धरातल है। पृथ्वी पर चार महासागर हैं- महासागर, अटलांटिक महासागर, आर्कटिक महासागर तथा हिंद महासागर। पृथ्वी पर उपलब्ध जल का 97% भाग महासागरों में पाया जाता है।

**च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -**

1. पृथ्वी पर एक जल-बजट या भूमण्डलीय जल संतुलन है जिसमें वर्षण आय के समान है जबकि वाष्पीकरण और वाष्पोत्सर्जन व्यय है। महासागरों, नदियों, झीलों या तालाबों में विद्यमान जल के ऊपर सूर्य की किरणें पड़ने से वाष्पीकरण होता है। पादप अपनी जड़ों द्वारा भूमि से जल ग्रहण करते हैं और अपनी पत्तियों द्वारा उसे जलवाष्प के रूप में पुनः वायु को दे देते हैं। पादपों की इस प्रक्रिया से जल वापस देने को वाष्पोत्सर्जन कहते हैं। कुछ क्षेत्रों में वसंत ऋतु में बर्फ पिघलने या वर्षा ऋतु में अधिक वर्षा के कारण जल एकत्र हो जाता है। इस अतिरिक्त जल के कारण जल संतुलन बिगड़ जाता है। इसके विपरीत स्थिति भी हो सकती है। गर्मियों में वाष्पीकरण बढ़ जाता है, जिससे मौसम शुष्क हो जाता है तथा जल आपूर्ति कम हो जाती है। हम पृथ्वी का जल बजट नहीं बदल सकते, परंतु जल के प्रयोग को नियंत्रित कर सकते हैं। नगरों के उद्योगों में प्रयोग होने वाले जल का बड़ा भाग नदियों या महासागरों में अनुपयोगी जल के रूप में वापस चला जाता है।

2. पृथ्वी पर एक जल-बजट या भूमण्डलीय जल संतुलन है। जिसमे वर्षण आय के समान है जबकि वाष्पीकरण और वाष्पोत्सर्जन व्यय है। महासागरों, नदियों, झीलों या तालाबों मे विद्यमान जल के ऊपर सूर्य की किरणें पडने से वाष्पीकरण होता।

   पादप अपनी जडों द्वारा भूमि से जल ग्रहण करते है और अपनी पत्तियों द्वारा उसे जलवाष्प के रुप मे पुनः वायु को दे देते है। पादपों की इस प्रक्रिया से जल वापस देने को वाष्पोत्सर्जन कहते है। कुछ क्षेत्रों मे वसंत ऋतु मे बर्फ पिघलने या वर्षा ऋतु मे अधिक वर्षा के कारण जल एकत्र हो जाता

है। इस अतिरिक्त जल के कारण जल संतुलन बिगड जाता है। इसके विपरीत स्थिति भी हो सकती है। गर्मियों मे वाष्पीकरण बढ जाता है, जिससे मौसम शुष्क हो जाता है तथा जल आपूर्ति कम हो जाती है।

3. वायु के प्रभाव से समुद्र के जल के ऊपर-नीचे होने की क्रिया को लहरें या तरंगें कहते हैं। लहरों को केवल सतह पर महसूस किया जा सकता है, जबकि गहराई में यह प्रतीत नहीं होती। पवन की गति के साथ तरंगें धीमी तथा तीव्र होती रहती है। तूफान के समय जब पवन की गति बहुत तेज होती है तो लहरें बहुत ऊँची उठती है। ये लहरें भूकंप, महासागरों के नीचे ज्वालामुखी उद्‌गार ऐसी ही अन्य हलचलों से उत्पन्न होती है। आजकल लहरों की शक्ति का प्रयोग विद्‌युत उत्पादन के लिए किया जाता है। इन लहरों का पूर्वानुमान न होने पर मछुआरों को बहुत बड़ी हानि होती है।

4. महासागरीय जल के नियमित अंतराल पर दिन में दो बार चढ़ाव और उतार क्रमशः ज्वार-भाटा कहलाता है। ज्वार-भाटा अधिकांशतः सागरों व महासागरों में अनुभव होते हैं। पृथ्वी की सतह पर सूर्य और चन्द्रमा का गुरुत्वाकर्षण बल ज्वार-भाटा का कारण है। ज्वार-भाटा दो प्रकार के होते हैं -

   दीर्घ ज्वार नौका संचालन में सहायक होते हैं। ये जल-स्तर को तट की ऊँचाई तक पहुँचाते हैं। ये जहाजों को बंदरगाह तक पहुँचाने में सहायक होते हैं। उच्च ज्वार मछली पकड़ने में भी मदद करते हैं। उच्च ज्वार के दौरान अनेक मछलियाँ तट के निकट तक आ जाती हैं। इसके फलस्वरूप मछुआरे बिना कठिनाई के मछलियाँ पकड़ लेते हैं।

   उच्च ज्वार के समय लवणीय जल निचले तटीय स्थलों पर फैल जाता है और मैदान में जमा हो जाता है, जो सूखने पर सामान्य नमक बनाने के काम आता है। कुछ स्थानों पर ज्वार-भाटे की ऊर्जा का प्रयोग विद्युत उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। ज्वार भाटीय ऊर्जा व शक्ति केन्द्रों की स्थापना यू.के., कनाडा, फ्रांस और जापान में हो चुकी है का कूड़ा कचरा या नदियों द्वारा बिछाई गई मिट्‌टी को बहा ले जाते हैं।

5. **जल संरक्षण :** हम यदि कोशिश करें तो भी जल-चक्र को बदलना संभव नहीं है तथा अधिक जनसंख्या के कारण जल आपूर्ति को हम आवश्यकता के अनुसार बढ़ाने में भी असमर्थ हैं। बहुत-सा जल नगरों तथा उद्‌योगों के कारण व्यर्थ चला जाता है तथा बिना उपचार किए ही बहुत-सा जल नदी-नालों में बहा दिया जाता है जो इन जल भंडारों के जल को भी प्रदूषित

कर देता है। एक बहुमूल्य संसाधन इस प्रकार व्यर्थ हो जाता है। बढ़ती हुई जनसंख्या की माँग को पूरा करने के लिए हमें जल का संरक्षण करना जरूरी है, यह समय की माँग है तथा आवश्यक भी है कि हम जल का उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से करें।

## पाठ–5 : वायुमण्डल

**क. सही विकल्प पर सही ( ✓ ) का चिह्न लगाओ–**

1. ये सभी
2. 78% नाइट्रोजन
3. समतामण्डल में
4. बैरोमीटर से

**ख. रिक्त स्थान भरो –**

1. समीर
2. अधिक
3. क्षोभमण्डल
4. 1600
5. मध्य मण्डल

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–**

1. ✓
2. ✓
3. ✗
4. ✗

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. वायु का आवरण जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है– वायुमण्डल कहलाता है।
2. वायु की क्षैतिज गति को पवन कहते है। पवन सदा उच्च दाब क्षेत्रों से भिन्न दाब क्षेत्रों की ओर चलती है।
3. पृथ्वी पर वायु का आवरण चढा है। यह आवरण, जिसमे अनेक प्रकार की गैसें पाई जाती है, पृथ्वी पर दाब डालता है जिसे वायुदाब कहा जाता है।
4. हिमालय प्रदेश मे वर्षा का यही रुप दिखाई पडता है। पर्वत का हवा की दिशा वाला भाग अत्यधिक वर्षा प्राप्त करता है जबकि विपरीत ढाल पर वर्षा न्यूनतम होती है या अन्य शब्दों मे, उस भाग मे नाममात्र की वर्षा होती है और इन प्रदेशों को वृष्टिछाया प्रदेश कहते हैं।
5. किसी स्थान, राज्य या देश की अधिक लम्बे समय की वायुमण्डलीय दशाओं के योग को जलवायु कहते हैं।
6. वायुमण्डल से द्रवीय या ठोस जल का धरती पर गिरना वर्षण कहलाता हैं। इसमे वर्षा, ओस, बर्फ, ओले आदि आते हैं।

ङ. **लघु उत्तरीय प्रश्न** –

1. **ग्रहीय पवनें** – पवन जो एक ही दिशा में लगातार चलती हैं ग्रहीय पवनें कहलाती हैं। ये पवनें तीन प्रकार की हैं :- व्यापारिक पवनें, पछुआ पवनें, ध्रुवीय पवनें।

2. पवन जो एक ही दिशा में लगातार चलती हैं ग्रहीय पवनें कहलाती हैं। ये पवनें तीन प्रकार की हैं :- व्यापारिक पवनें, पछुआ पवनें, ध्रुवीय पवनें।

   **व्यापारिक पवनें :** ये उप-उष्ण कटिबंध से भूमध्य रेखीय निम्न दाब पट्टियों तक प्रवाहित होने वाली स्थायी पवनें हैं। ये पवनें 30° उत्तरी अक्षांश एवं 30° दक्षिणी अक्षांश से भूमध्य रेखा की ओर उत्तर-पूरब तथा दक्षिण-पूरब से चलती हैं।

3. मौसम और जलवायु दोनों समान प्रतीत होते हैं और दोनों ही में वर्षा, ताप, आर्द्रता, दाब, वायु आदि कारकों को सम्मिलित किया जाता है परन्तु दोनों ही अलग-अलग हैं। किसी स्थान विशेष की निश्चित समय पर वायुमण्डलीय दशाओं को मौसम कहते हैं परन्तु जलवायु इससे बिलकुल भिन्न भौतिक दशा है। किसी स्थान, राज्य या देश की अधिक लम्बे समय की वायुमण्डलीय दशाओं के योग को जलवायु कहते हैं। अनेक स्थानों की जलवायु उनके ताप, वायुमण्डलीय दाब, वर्षा, धूप, बादल, वायु तथा आर्द्रता के कारण भिन्न-भिन्न हो सकती है। मौसम दिन-प्रतिदिन बदल सकता है।

4. वायुमण्डल में विद्यमान वायु में 78% नाइट्रोजन, 21% ऑक्सीजन, 0.03% कार्बन-डाइऑक्साइड तथा शेष 0.07% में हीलियम, ओजोन तथा जलवाष्प सम्मिलित रहती हैं। इनके अतिरिक्त, वायु में कुछ मात्रा में धूल के कण भी पाये जाते हैं। पृथ्वी पर वायुमण्डल की उपस्थिति के कारण ही इसे सौर परिवार का अनोखा ग्रह कहते हैं। धरातल से वायुमण्डल की सीमा 1000 किमी० तक जाती है परन्तु पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण वास्तविक वायुमण्डल की सीमा 32 किमी० तक है। आइये, वायुमण्डल के अनेक संघटकों की उपयोगिता के विषय में जानें।

5. **ग्रहीय पवनें** – पवन जो एक ही दिशा में लगातार चलती हैं ग्रहीय पवनें कहलाती हैं। ये पवनें तीन प्रकार की हैं :- व्यापारिक पवनें, पछुआ पवनें, ध्रुवीय पवनें।

   **सावधिक पवनें** – कुछ पवनें दिन या वर्ष की एक अवधि विशेष में केवल एक निश्चित दिशा में चलती हैं ये पवनें सावधिक पवनें कहलाती हैं। स्थलीय और समुद्री झकोरे (समीर) तथा मानसून ऐसी कुछ सावधिक पवनें हैं।

**स्थानीय पवनें** – पवनें, जो किसी स्थान विशेष में या वर्षभर एक निश्चित दिशा में और क्रम से चलती हैं, स्थानीय पवनें कहलाती हैं। भारत के उत्तर के विशाल मैदान में सूखी और गर्म लू, स्थानीय पवनें हैं। इन पवनों की उत्पत्ति वायुदाब या ताप में क्षेत्रीय परिवर्तनों के कारण होती है। स्थलीय और समुद्री समीर अन्य प्रकार की स्थानीय पवनें हैं।

**च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –**

1. वायु की क्षैतिज गति को पवन कहते हैं। पवन सदा उच्च दाब क्षेत्रों से भिन्न दाब क्षेत्रों की ओर चलती हैं। पवन तीन प्रकार की होती हैं।

   1. ग्रहीय पवनें या स्थायी पवनें
   2. सावधिक पवनें
   3. स्थानीय पवनें

   **1. ग्रहीय पवनें** – पवन जो एक ही दिशा में लगातार चलती हैं ग्रहीय पवनें कहलाती हैं। ये पवनें तीन प्रकार की हैं :- व्यापारिक पवनें, पछुआ पवनें, ध्रुवीय पवनें।

   अ. व्यापारिक पवनें : ये उप–उष्ण कटिबंध से भूमध्य रेखीय निम्न दाब पट्टियों तक प्रवाहित होने वाली स्थायी पवनें हैं। ये पवनें 30 उत्तरी अक्षांश एवं 30 दक्षिणी अक्षांश से भूमध्य रेखा की ओर उत्तर–पूरब तथा दक्षिण–पूरब से चलती हैं।

   ब. पछुआ पवनें : ये पवनें उप–उष्ण कटिबंधीय उच्च दाब पट्टियों से उप–ध्रुवीय निम्न दाब पट्टियों तक चलती हैं। ये पवनें उत्तरी गोलार्द्ध में दक्षिण–पश्चिम और दक्षिणी गोलार्द्ध में उत्तर–पश्चिम से चलती हैं।

   स. ध्रुवीय पवनें : ये पवनें उत्तरी–ध्रुव और दक्षिणी–ध्रुव की उच्च दाब पट्टियों से निम्न दाब वाले उप–ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर चलती हैं। उत्तरी गोलार्द्ध में ये उत्तर–पूरब दिशा से प्रवाहित होती हैं और दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिण–पूरब दिशा से चलती हैं। ये अत्यधिक ठंडी और शुष्क होती हैं।

   **2. सावधिक पवनें** – कुछ पवनें दिन या वर्ष की एक अवधि विशेष में केवल एक निश्चित दिशा में चलती हैं ये पवनें सावधिक पवनें कहलाती हैं। स्थलीय और समुद्री झकोरे (समीर) तथा मानसून ऐसी कुछ सावधिक पवनें हैं।

   अ. मानसूनी पवनें – इन पवनों को मौसमी पवनें भी कहते हैं जो ऋतु बदलने पर अपनी दिशा भी बदल लेती हैं। ग्रीष्म ऋतु में ये पवनें समुद्र से स्थल की ओर तथा शीत ऋतु में स्थल से समुद्र की ओर चलती हैं क्योंकि ग्रीष्म ऋतु में समुद्र तल

के ऊपर वायुमण्डलीय दाब अधिक होता है तथा स्थल तल पर कम और शीत ऋतु में स्थल पर दाब समुद्र तल से अधिक होता है क्योंकि ग्रीष्म ऋतु में स्थल समुद्र की अपेक्षा जल्दी गर्म होता है और शीत ऋतु में स्थल समुद्र की अपेक्षा जल्दी ठंडा होता है। ग्रीष्मकालीन मानसून से भारत के कई क्षेत्रों में वर्षा होती है।

ब. स्थलीय और समुद्री झकोरे – रात्रि के समय स्थल अपने समीपवर्ती सागर की तुलना में अधिक तेजी से ठंडा होता है इससे स्थल पर उच्च दाब बन जाता है। रात्रि के समय समुद्र तट के समीप पवनें स्थल से सागर की ओर चलती हैं, इन्हें 'स्थलीय समीर' कहते हैं। दिन में स्थल का तापमान समुद्र जल की तुलना में अधिक होता है, अतः स्थल पर समुद्र की तुलना में दाब कम होता है। दिन में समुद्र की ओर बहने वाली पवन समुद्री समीर कहलाती हैं।

**3. स्थानीय पवनें** – पवनें, जो किसी स्थान विशेष में या वर्षभर एक निश्चित दिशा में और क्रम से चलती हैं, स्थानीय पवनें कहलाती हैं। भारत के उत्तर के विशाल मैदान में सूखी और गर्म लू, स्थानीय पवनें हैं। इन पवनों की उत्पत्ति वायुदाब या ताप में क्षेत्रीय परिवर्तनों के कारण होती है। स्थलीय और समुद्री समीर अन्य प्रकार की स्थानीय पवनें हैं।

2. **पर्वतीय वर्षा** – जब भाप से भरी गर्म हवा समुद्र से आकर किसी पर्वत या ऊँचे स्थान से टकराती है तो यह ऊपर उठती है। एक निश्चित ऊँचाई पर पहुँचकर यह संतृप्त हो जाती है तथा संघनित होकर भारी वर्षा के रूप में नीचे गिरने लगती है। हिमालय प्रदेश में वर्षा का यही रूप दिखाई पड़ता है। पर्वत का हवा की दिशा वाला भाग अत्यधिक वर्षा प्राप्त करता है जबकि विपरीत ढाल पर वर्षा न्यूनतम होती है या अन्य शब्दों में, उस भाग में नाममात्र की वर्षा होती है और इन प्रदेशों को वृष्टिछाया प्रदेश कहते हैं। पर्वतीय वर्षा की मात्रा सर्वाधिक होती है।

**चक्रवाती वर्षा** – ठण्डी और गर्म हवाओं के घनत्व बिलकुल भिन्न होते हैं इसलिए वे ठीक प्रकार से मिश्रित नहीं हो पातीं तथा चक्रवात की उत्पत्ति इसी कारण से होती है। गर्म वायु ऊपर उठकर ठण्डी होती है। इसकी नमी संघनित होकर बादल बनाती है जो भारी वर्षा के रूप में बरसते हैं। यह वर्षा थोड़े समय के लिए बिजली की चमक और गर्जना के साथ होती है।

## पाठ-6 : मानवीय पर्यावरण

**क. सही विकल्प पर सही ( ✓ ) का चिह्न लगाओ-**

1. रेल यातायात
2. संकीर्ण बस्तियों में
3. बहुप्रकोष्ठिक बस्तियाँ
4. ये दोनों

**ख. रिक्त स्थान भरो -**

1. बहुमंजिला
2. जनसंचार
3. चौथे

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-**

1. ✓
2. ✓
3. ✓
4. ✗
5. ✓

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. अधिक चौडी सडकें जिन पर एक साथ कई वाहन तेजगति से दौड सकते है 'महामार्ग' या एक्सप्रेस हाई-वे कहलाते है।
2. भूमि पर लंबी दूरी की यात्रा करने के लिये, सामान ले जाने व लाने के लिये रेल-यातायात सस्ता एवं सुविधाजनक है आजकल यह यातायात का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है।
3. बिखरे हुए मकानों अर्थात एक-दूसरे से काफी फासले पर स्थित मकानों को प्रकीर्ण बस्तियाँ कहते हैं।
4. जो लोग शहरों या कस्बों में निवास करते हैं वे अपने घर ईंट, कंकरीट, सीमेंट, लोहा, पत्थर, लकडी, टाइल्स आदि से बनाते है। इन घरों को पक्का घर कहते हैं।
5. एक स्थान से दूसरे स्थान के मध्य आवागमन (आना जाना या आने जाने) को यातायात कहते हैं।
6. यातायात के चार साधनों के नाम निम्नलिखित है-
   1. सडक यातायात
   2. जल यातायात
   3. रेल यातायात
   4. वायु यातायात

**ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. सड़क यातायात सबसे लोकप्रिय यातायात का साधन है। इससे घरों तक पहुँचने की सुविधा है। सड़कों का निर्माण रेलमार्ग की तुलना में कम खर्चीला तथा आसान है। सड़कें पहाड़ी क्षेत्रों में भी बनाई जा सकती हैं परंतु अधिक दूरी के लिए सड़क यातायात इतना सुविधाजनक नहीं है जितना रेल यातायात।

   अधिक चौड़ी सड़कें जिन पर एक साथ कई वाहन तेजगति से

दौड़ सकते हैं 'महामार्ग' या 'एक्सप्रेस हाई-वे' कहलाते हैं। भारत के बड़े शहर जैसे- मुंबई, कोलकाता, दिल्ली, चेन्नई आदि महामार्गों द्वारा आपस में जुड़े हैं।

2. प्राचीन समय से ही लोग मिट्टी-गारा, फूँस, पेड़ की शाखाओं, बाँस आदि से बने घरों में रहा करते थे। इन घरों को कच्चे घर कहा जाता था। आज भी भारत के कुछ गाँवों में हम कच्चे घरों को देख सकते हैं। उनमें से अधिकतर किसान हैं और वे अपने आस-पास मिलने वाली कच्ची सामग्री से अपने मकानों को बनाते हैं। उनके घर शहरी घरों की अपेक्षा सादे तथा साधारण और बिना आधुनिक सुविधाओं युक्त होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों के व्यवसाय खेती, मत्स्य पालन, वन आधारित धंधे, मुर्गीपालन, सूअर पालन, रेशम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, कुटीर उद्योग आदि हैं। ग्रामीण बस्तियाँ सघन, प्रकीर्ण रेखीय तथा बहुप्रकोष्ठिक हो सकती है।

3. **सघन बस्तियाँ** - समतल भूमि पर संकरी और कम हवादार गलियों में बने मकानों को, जिनमें कई मंजिलें भी हो सकती हैं, सघन बस्तियाँ कहते हैं। इस प्रकार की बस्तियाँ नदी-घाटियों में ज्यादातर देखने को मिलते हैं।

**प्रकीर्ण बस्तियाँ** - बिखरे हुए मकानों अर्थात् एक-दूसरे से काफी फासले पर स्थित मकानों को प्रकीर्ण बस्तियाँ कहते हैं। मकान कच्चे तथा पक्के दोनों ही प्रकार के होते हैं। पर्वतों और पहाड़ों पर रहने वाले लोग अपने मकान दूर-दूर बनाते हैं। इन स्थानों पर अनेक धार्मिक स्थल स्थित हैं। यहाँ के निवासी अपने मकान और दुकान इन स्थानों पर अनेक धार्मिक स्थलों के निकट बनाते हैं, हिमालय पर्वत पर इस प्रकार की अनेक बस्तियों को देखा जा सकता है।

4. **रेखीय बस्तियाँ** - ऐसी बस्तियाँ अधिकांशतः सड़कों, नहरों या नदियों के साथ रेखीय रूप से बसती हैं। इनमें मकान ऐसे बनाते हैं कि आमने-सामने मुखरित हों।

**बहुप्रकोष्ठिक बस्तियाँ** - इस प्रकार की बस्तियाँ ग्रामीण क्षेत्रों में पाई जाती हैं। जहाँ के मकान स्थानीय माल से बनते हैं, जैसे-मिट्टी, ईंटें, लकड़ी के गट्ठे इत्यादि। मकानों की दीवारें बहुत मोटी-मोटी होती हैं तथा मिट्टी से लीपकर परत बनी होती हैं। इनकी छत ढाल देकर बाँस से बनाई जाती हैं। जिससे वर्षा का जल बहकर निकल जाए।

5. सड़क यातायात सबसे लोकप्रिय यातायात का साधन है। इससे घरों तक पहुँचने की सुविधा है। सड़कों का निर्माण रेलमार्ग की तुलना में कम खर्चीला तथा आसान है। सड़कें पहाड़ी क्षेत्रों में

भी बनाई जा सकती हैं परंतु अधिक दूरी के लिए सड़क यातायात इतना सुविधाजनक नहीं है जितना रेल यातायात।

अधिक चौड़ी सड़कें जिन पर एक साथ कई वाहन तेजगति से दौड़ सकते हैं 'महामार्ग' या 'एक्सप्रेस हाई-वे' कहलाते हैं। भारत के बड़े शहर जैसे- मुंबई, कोलकाता, दिल्ली, चेन्नई आदि महामार्गों द्वारा आपस में जुड़े हैं।

**च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -**

1. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे रहने के लिए घर की आवश्यकता होती है। आदिमानव गुफाओं में और पेड़ों पर रहा करता था। आवासीय स्थल का चुनाव अपेक्षित जलवायु, जल की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता, उपजाऊ भूमि आदि प्राकृतिक दशाओं को ध्यान में रखकर किया जाता था। मानव अधिवास के कारण विश्व की अनेक सभ्यताओं का विकास अनेक नदियों के किनारे हुआ।

   बस्तियों को दो प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं:-

   **अस्थायी बस्तियाँ** - इस प्रकार की बस्तियाँ कम समय के लिए विकसित होती हैं जिसमें रहकर लोग आखेट, संग्रहण, निर्माण कार्य आदि काम करते थे। सामान्यत: इस प्रकार की बस्तियाँ जंगलों, पहाड़ों मरुस्थलों आदि में पाई जाती हैं।

   **स्थायी बस्तियाँ** - किसी एक स्थान विशेष पर अधिक समय के लिए रहने हेतु स्थायी बस्तियाँ बनाई जाती हैं। इन बस्तियों में पक्के मकान, इमारतें, विद्यालय, अस्पताल, दफ्तर, गलियों, सड़कों आदि का निर्माण किया जाता है।

   **ग्रामीण बस्तियाँ** - प्राचीन समय से ही लोग मिट्टी-गारा, फूँस, पेड़ की शाखाओं, बाँस आदि से बने घरों में रहा करते थे। इन घरों को कच्चे घर कहा जाता था। आज भी भारत के कुछ गाँवों में हम कच्चे घरों को देख सकते हैं। उनमें से अधिकतर किसान हैं और वे अपने आस-पास मिलने वाली कच्ची सामग्री से अपने मकानों को बनाते हैं।

   **सघन बस्तियाँ** - समतल भूमि पर संकरी और कम हवादार गलियों में बने मकानों को, जिनमें कई मंजिलें भी हो सकती हैं, सघन बस्तियाँ कहते हैं। इस प्रकार की बस्तियाँ नदी-घाटियों में ज्यादातर देखने को मिलते हैं।

   **प्रकीर्ण बस्तियाँ** - बिखरे हुए मकानों अर्थात् एक-दूसरे से काफी फासले पर स्थित मकानों को प्रकीर्ण बस्तियाँ कहते हैं। मकान कच्चे तथा पक्के दोनों ही प्रकार के होते हैं। पर्वतों और पहाड़ों पर रहने वाले लोग अपने मकान दूर-दूर बनाते हैं। इन

स्थानों पर अनेक धार्मिक स्थल स्थित हैं।

**रेखीय बस्तियाँ** – ऐसी बस्तियाँ अधिकांशतः सड़कों, नहरों या नदियों के साथ रेखीय रूप से बसती हैं। इनमें मकान ऐसे बनाते हैं कि आमने-सामने मुखरित हों।

2. **सड़क यातायात** – पक्की सड़कें, पक्की ईंटों, सीमेंट और तारकोल से बनाई जाती हैं। ये सभी मौसमों में उपयुक्त होती हैं। भारत के सभी शहर, नगर तथा कई गाँव इन्हीं सड़कों के कारण एक-दूसरे से जुड़े हैं। आज की दुनिया के कुछ भागों में जहाँ यातायात के आधुनिक साधन उपलब्ध नहीं है; वहाँ लोग वजन ढ़ोने के लिए पशुओं का प्रयोग करते हैं।

सड़क यातायात सबसे लोकप्रिय यातायात का साधन है। इससे घरों तक पहुँचने की सुविधा है। सड़कों का निर्माण रेलमार्ग की तुलना में कम खर्चीला तथा आसान है। सड़कें पहाड़ी क्षेत्रों में भी बनाई जा सकती हैं परंतु अधिक दूरी के लिए सड़क यातायात इतना सुविधाजनक नहीं है जितना रेल यातायात।

अधिक चौड़ी सड़कें जिन पर एक साथ कई वाहन तेजगति से दौड़ सकते हैं 'महामार्ग' या 'एक्सप्रेस हाई-वे' कहलाते हैं। भारत के बड़े शहर जैसे- मुंबई, कोलकाता, दिल्ली, चेन्नई आदि महामार्गों द्वारा आपस में जुड़े हैं।

**रेल यातायात** – भूमि पर लंबी दूरी की यात्रा करने के लिए, सामान ले जाने व लाने के लिए रेल-यातायात सस्ता एवं सुविधाजनक है। आजकल यह यातायात का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। रेलवे उद्योगों में कच्चा माल ढोता है एवं तैयार माल को देशभर में पहुँचाता है। लोग लंबी यात्रा के लिए रेल यातायात को प्राथमिकता देते हैं।

प्रारम्भ में रेल गाड़ियों को चलाने हेतु भाप के इंजन का प्रयोग किया गया था लेकिन अब हमारे पास आधुनिक एवं अधिक सक्षम इंजन, जैसे-डीजल इंजन, बिजली चालित इंजन उपलब्ध हैं। आधुनिक इंजन बहुत तीव्र गति से दौड़ते हैं, जिनसे यात्रा बहुत सरल एवं तीव्र हो गई है।

3. भूमि पर लंबी दूरी की यात्रा करने के लिए, सामान ले जाने व लाने के लिए रेल-यातायात सस्ता एवं सुविधाजनक है। आजकल यह यातायात का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। रेलवे उद्योगों में कच्चा माल ढोता है एवं तैयार माल को देशभर में पहुँचाता है। लोग लंबी यात्रा के लिए रेल यातायात को प्राथमिकता देते हैं।

भारत का रेलमार्ग एशिया का सबसे बड़ा एवं विश्व का चौथे स्थान का रेलमार्ग है।

पश्चिमी यूरोप एवं पूर्वी-केन्द्रीय उत्तरी अमेरिका का रेलमार्ग सबसे सघन है।

प्रारम्भ में रेल गाड़ियों को चलाने हेतु भाप के इंजन का प्रयोग किया गया था लेकिन अब हमारे पास आधुनिक एवं अधिक सक्षम इंजन, जैसे-डीजल इंजन, बिजली चालित इंजन उपलब्ध हैं। आधुनिक इंजन बहुत तीव्र गति से दौड़ते हैं, जिनसे यात्रा बहुत सरल एवं तीव्र हो गई है।

## पाठ-7 : शीतोष्ण घास के मैदानों में जीवन

**क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-**

1. प्रेयरी
2. जानवर
3. फार्मो से
4. कनाड़ा के प्रेयरी से
5. प्रेयरी

**ख. रिक्त स्थान भरो -**

1. मैक्सिको घाटी
2. शाद्वल
3. गेहूँ
4. वेल्ड

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-**

1. ✗
2. ✓
3. ✓
4. ✓
5. ✓

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. उत्तरी अमेरिका एवं कनाडा के कुछ भागों तक फैले घास के मैदानों को प्रेयरी कहते हैं।
2. वेल्ड की प्रमुख नदियों में लिम्पोपों, साबे, आरेन्ज तथा वाल आदि हैं।
3. कस्बों और नगरों के चारों ओर किसान सब्जियाँ उगाते हैं जिन्हें वे स्थानीय बाजारों में बेचते हैं। वे इसे बाजार-बागवानी के नाम से पुकारते है।
4. प्रेयरी का अपवाहन मिसीसिपी की सहायक नदियाँ और कनाडा के प्रेयरी का अपवाहन सासकेच्वान नदी की सहायक नदियाँ करती हैं।
5. ये घास भूमियाँ दक्षिण-पूर्वी अफ्रीका मे स्थित हैं।

**ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. **वेल्ड** - ये घास भूमियाँ दक्षिण-पूर्वी अफ्रीका में स्थित हैं।

वेल्ड वे पठार हैं जो 600 से 1100 मीटर की ऊँचाई वाले होते हैं। इसके पूर्वी किनारे पर ड्रेकन्सबर्ग पर्वत-श्रेणियाँ तथा पश्चिम में कालाहारी मरुस्थल है। ऊँचाई के अनुसार वेल्ड को नीचे, मध्य और ऊँचे वेल्ड में वर्गीकृत किया गया है। ऊँचे वेल्ड किसी-किसी जगह पर 1600 मीटर से भी ज्यादा ऊँचे हैं। वेल्ड दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित हैं। लिमपोपो, साबी और ऑरेंज नदियाँ व इनकी सहायक नदियाँ इस प्रदेश को सिंचित करती हैं।

2. उत्तरी अमेरिका एवं कनाडा के कुछ भागों तक फैले घास के मैदानों को प्रेयरी कहते हैं। ये समतल, मंद ढलान या पहाड़ियों वाले प्रदेश हैं जो पश्चिम में मिसीसिपी नदी से रॉकी पर्वतों के गिरिपीठ तक का बहाव है एवं पूर्व में ग्रेटलेक तक फैले हुए हैं। उत्तरी अमेरिका की प्रमुख झीलें प्रेयरी के पूर्व में स्थित है। प्रेयरी के पूर्व स्थलीय क्षेत्र समतल है जोकि पश्चिम में जाते-जाते लगभग 500 मी० तक ऊँचे होते जाते हैं। उत्तरी प्रेयरी भाग आर्कटिक महासागर की ओर ढलान लिए हुए हैं। जबकि इसका दक्षिणी भाग मैक्सिको घाटी की ओर ढुलित है। संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रेयरी का अपवाहन मिसीसिपी की सहायक नदियाँ तथा कनाड़ा के प्रेयरी का अपवाहन सासकेच्वान नदी की सहायक नदियाँ करती हैं।

3. प्रेयरी प्रदेश समुद्र के प्रभाव से बहुत दूर हैं इसलिए यहाँ की जलवायु शीतोष्ण कटिबंधीय प्रदेशों की अपेक्षा ठंडी और शुष्क है। शीत काल यहाँ बहुत ठंडा होता है। ग्रीष्म काल गर्म (कोष्ण) होता है। वार्षिक वर्षा बहुत कम होती है। शीत काल में हिमवर्षा होती है। अधिकांश वर्षा ग्रीष्म और बसंत ऋतु में होती है। इसके उत्तरी भाग में ठंडी हवाएँ चलती हैं जो ध्रुवीय क्षेत्रों से आती हैं।

4. 1. प्रेयरी के पूर्व मे उत्तरी अमेरिका की प्रमुख झीलें पडती हैं।
   2. प्रेयरी मे किसान गेहूँ, मक्का, सोयाबीन, आलू, कपास, तिलहन तथा सब्जियाँ उगाते हैं। प्रेयरी मे विश्व का अतिरिक्त गेहूँ पैदा होता हैं जिसके कारण इसे विश्व का अन्न भंडार पुकारा जाता है।
   3. छोटे आकार के जंतु जैसे खरगोश कोयोट, कुत्ते आदि प्रेयरी मे पाए जाने वाले जंतु हैं।
   4. प्रेयरी के निवासियों का मुख्य व्यवसाय दुग्ध उत्पादन, बाजार-बागबानी, पशुपालन, मिश्रित कृषि, तेल शोधानशाला आदि।
   5. प्रेयरी को गेहूँ उत्पादन के कारण विश्व का अन्नागार कहा जाता है।

## च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. प्रेयरी प्रदेश समुद्र के प्रभाव से बहुत दूर हैं इसलिए यहाँ की जलवायु शीतोष्ण कटिबंधीय प्रदेशों की अपेक्षा ठंडी और शुष्क है। शीत काल यहाँ बहुत ठंडा होता है। ग्रीष्म काल गर्म (कोष्ण) होता है। वार्षिक वर्षा बहुत कम होती है। शीत काल में हिमवर्षा होती है। अधिकांश वर्षा ग्रीष्म और बसंत ऋतु में होती है। इसके उत्तरी भाग में ठंडी हवाएँ चलती है जो ध्रुवीय क्षेत्रों से आती हैं।

2. उत्तरी अमेरिका एवं कनाडा के कुछ भागों तक फैलें घास के मैदानों को प्रेयरी कहते हैं। ये समतल, मंद ढलान या पहाड़ियों वाले प्रदेश हैं जो पश्चिम में मिसीसिपी नदी से रॉकी पर्वतों के गिरिपीठ तक का बहाव है एवं पूर्व में ग्रेटलेक तक फैले हुए हैं। उत्तरी अमेरिका की प्रमुख झीलें प्रेयरी के पूर्व में स्थित है। प्रेयरी के पूर्व स्थलीय क्षेत्र समतल है जोकि पश्चिम में जाते-जाते लगभग 500 मी० तक ऊँचे होते जाते हैं। उत्तरी प्रेयरी भाग आर्कटिक महासागर की ओर ढलान लिए हुए हैं। जबकि इसका दक्षिणी भाग मैक्सिको घाटी की ओर ढुलित है। संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रेयरी का अपवाहन मिसीसिपी की सहायक नदियाँ तथा कनाड़ा के प्रेयरी का अपवाहन सासकेच्वान नदी की सहायक नदियाँ करती हैं।

   यहाँ के लोग गेहूँ, मक्का, जौ, जई, आलू, सोयाबीन, फ्लैक्स, तिलहन, कपास तथा सब्जियों की खेती करते हैं। प्रेयरी में विश्व का अतिरिक्त गेहूँ पैदा होता है जिसके कारण इसे 'विश्व का अनाज भंडार' नाम से जाना जाता है। गेहूँ की खेती करने के लिए आधुनिक कृषि-यंत्रों तथा मशीनों का प्रयोग किया जाता है। गेहूँ के बड़े-बड़े फार्मों में गेहूँ की फसल काटने के लिए कम्बाइन हार्वेस्टरों का प्रयोग किया जाता है। प्रेयरी के गेहूँ फार्म बहुत बड़े हैं इसलिए प्रेयरी को विश्व का अन्नागार भी कहा जाता है। यहाँ की अधिकतर जनसंख्या फार्मों में कृषि कार्यों में लगी हुई है। कस्बों और नगरों के चारों ओर किसान सब्जियाँ उगाते हैं जिन्हें वे स्थानीय बाजारों में बेचते हैं। वे इसे बाजार-बागवानी के नाम से पुकारते हैं।

   यहाँ गायों को बड़े-बड़े फार्मों में पाला जाता है जिन्हें रेंच कहते हैं तथा गाय-पालकों को काउबॉय कहते हैं। डेरी फार्मिंग (दुग्ध व्यवसाय) तथा कृषि, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग पर आधारित हैं।

## पाठ-1 : भारत और मध्यकालीन विश्व

**क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-**

1. सातवीं सदी में
2. बगदाद में
3. पाँचवी शताब्दी में
4. हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात
5. अरब में

**ख. रिक्त स्थान भरो -**

1. सिन्ध
2. हारूअलरशीद
3. 622 ई०
4. दमिश्क
5. धर्मयुद्ध

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-**

1. ✓
2. ✗
3. ✗
4. ✓
5. ✗

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. मध्यकाल में गाँव में आने वाला कोई भी अजनान व्यक्ति जो समाज और संस्कृति का अंग न हो विदेशी कहलाता था।
2. आरम्भ में मक्का शहर के कई लोगो ने मोहम्मद साहब की बातों का विरोध किया जिसके कारण मोहम्मद साहब को मक्का छोड़कर 622 ई० में मदीना जाना पड़ा।
3. मंगोल मध्य एशिया की एक जंगली जाती थी। 1206 ई० मे एक मंगोल यौद्धा तेमुजिन ने मंगोलों को संगठित किया गया और चंगेज खाँ की उपाधि धारण की 1211 ई० मे चंगेज खाँ ने उत्तरी चीन को रौंद दिया। इस समय मंगोलो ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की।
4. सामाजिक क्षेत्र में भी अनेक परिवर्तन हुए। जाति प्रथा का कठोरता से पालन किया जाने लगा। स्त्रियों की दशा शोचनीय थी। बाल-विवाह, सती प्रथा परदा प्रथा आदि सामाजिक बुराईया व्याप्त थी।
5. भारत में आठवीं शताब्दी को मध्य युग का आरम्भ तथा अठारहवीं शताब्दी को मधय युग का अन्त माना जाता है।

**ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. वास्तव में, आठवीं शताब्दी में भारत में अनेक राजनीतिक,

सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन हुए। इसी प्रकार अठारहवीं शताब्दी के मध्य में मुगल साम्राज्य का विघटन, मराठों का पतन तथा भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना कुछ ऐसी महत्वपूर्ण घटनाएँ थीं जिनके कारण अठारहवीं शताब्दी को मध्य युग का अन्त तथा आधुनिक युग का आरम्भ माना जाता है।

2. आज हम हिन्दुस्तान शब्द का प्रयोग आधुनिक राष्ट्र राज्य 'भारत' के लिए करते हैं। तेरहवीं सदी में जब फारसी के इतिहासकार मिन्हाज-ए-सिराज ने हिन्दुस्तान शब्द का प्रयोग किया था तो उसका आशय पंजाब, हरियाणा और गंगा-यमुना के बीच में स्थित इलाकों से था। उसने इस शब्द का राजनीतिक अर्थ में उन क्षेत्रों के लिए प्रयोग किया था जो दिल्ली के सुल्तान के अधिकार क्षेत्र में आते थे। सल्तनत के प्रसार के साथ-साथ इस शब्द के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र भी बढ़ते गए लेकिन हिन्दुस्तान शब्द में दक्षिण भारत का समावेश कभी नहीं हुआ। इसके विपरीत, सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में बाबर ने 'हिन्दुस्तान' शब्द का प्रयोग इस उपमहाद्वीप के भूगोल, पशु-पक्षियों और यहाँ के निवासियों की संस्कृति का वर्णन करने के लिए किया। यह प्रयोग चौदहवीं शताब्दी के कवि अमीर खुसरो द्वारा प्रयुक्त शब्द हिन्द के ही कुछ-कुछ समान था। परन्तु जहाँ भारत को एक भौगोलिक और सांस्कृतिक सच्य के रूप में पहचाना जा रहा था वहाँ हिन्दुस्तान शब्द से वे राजनीतिक और राष्ट्रीय अर्थ नहीं जुड़े थे जो हम आज जोड़ते हैं।

3. तुर्कों ने एक शक्तिशाली आटोमन साम्राज्य की स्थापना की। जब ओटोमन साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर था, इसका अधिकार टर्की के अतिरिक्त सीरिया, ईरान, अफगानिस्तान, फिलिस्तीन, अरब तथा मिस्र तक था। उन्होंने महमूद गजनवी और मुहम्मद गौरी के नेतृत्व में भारत पर आक्रमण किया और 1206 ई० से 1526 ई० तक भारत पर राज्य किया।

**च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -**

1. इतिहासकार किस युग का अध्ययन करते हैं और उनकी खोज की प्रकृति क्या है, इसे देखते हुए वे अलग-अलग तरह के स्रोतों का सहारा लेते हैं। इस काल के अध्ययन के लिए इतिहासकार जिन स्रोतों का प्रयोग करते हैं उनमें आपको बहुत-सी बातें ऐसी मिलेंगी जो पिछले युग से वैसी ही चली आ रही हैं। इतिहासकार इस काल के बारे में सूचना इकट्ठी करने के लिए अभी भी सिक्कों, शिलालेखों, स्थापत्य (भवन निर्माण कला) तथा लिखित सामग्री का प्रयोग करते हैं परन्तु कुछ बातें पहले से काफी भिन्न भी हैं।

इस काल में प्रामाणित लिखित सामग्री की संख्या और विविधता आश्चर्यजनक रूप से बढ़ गई। इसके कारण इतिहासकार सूचनाओं की अपेक्षा दूसरे प्रकार के स्रोतों का प्रयोग धीरे-धीरे कम करने लगे। इस समय के दौरान कागज क्रमशः सस्ता होता गया और बड़े पैमाने पर उपलब्ध भी होने लगा। लोग धर्मग्रन्थ, शासकों के वृतांत, संतों के लेखन तथा उपदेश, अर्जियों, अदालतों के दस्तावेज, हिसाब तथा करों के खाते आदि लिखने में कागज का प्रयोग करने लगे। धनी व्यक्ति, शासक जन, मठ तथा मन्दिर, पाण्डुलिपियाँ एकत्रित किया करते थे। इन पाण्डुलिपियों को पुस्तकालयों तथा अभिलेखागारों में रखा जाता है। इन पाण्डुलिपियों से इतिहासकारों को बहुत सारी विस्तृत जानकारी मिलती हैं परन्तु इनके उपयोग में कुछ कठिनाइयाँ भी हैं।

उन दिनों छापेखाने तो थे नहीं, इसलिए लिपिक या नकलनवीस हाथ से ही पाण्डुलिपियों की प्रतिकृति बनाते थे। इन पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपियाँ बनाते समय लिपिक छोटे-मोटे फेर-बदल करते चलते थे। समय के साथ-साथ प्रतिलिपियों की भी प्रतिलिपियाँ बनती रहीं और अन्ततः एक ही मूल ग्रन्थ की भिन्न-भिन्न प्रतिलिपियाँ एक-दूसरे से भिन्न हो गईं। इससे बड़ी गम्भीर समस्या उत्पन्न हो गई क्योंकि आज हमें लेखक की मूल पाण्डुलिपि शायद ही कहीं मिलती है। हमें बाद के लिपिकों द्वारा बनाई गई प्रतिलिपियों पर भी पूरी तरह निर्भर रहना पड़ता है। इसलिए इस बात का अनुमान लगाने के लिए कि मूलतः लेखक ने क्या लिखा था, इतिहासकारों को एक ही ग्रन्थ की विभिन्न प्रतिलिपियों का अध्ययन करना पड़ता है।

2. सातवीं शताब्दी में अरब में एक नए धर्म इस्लाम का उदय हुआ। इस धर्म ने अरबवासियों को एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति के रूप में उभारा। अरब के मक्का नामक शहर में सन् 570 ई० में हजरत मोहम्मद का जन्म हुआ था। उस समय अरब में अनेक छोटे-छोटे कबीले थे जो लगातार एक-दूसरे से लड़ते रहते थे। ये लोग बहुत सारे देवी-देवताओं की पूजा करते थे। हजरत मोहम्मद इन कबीलों के बीच आपसी सौहार्द एवं भाईचारा बढ़ाने के लिए यह सन्देश देने लगे कि ईश्वर एक है। एकमात्र अल्लाह से प्रार्थना करनी चाहिए। मोहम्मद साहब ने कहा कि अल्लाह को मानने वाले सब लोग बराबर हैं और एक हैं।

आरम्भ में मक्का शहर के कई लोगों ने मोहम्मद साहब की बातों का विरोध किया, जिसके कारण मोहम्मद साहब को मक्का छोड़कर 622 ई० में मदीना जाना पड़ा। इनका यह जाना

हिजरत कहा जाता है। इसी समय से मुसलमानों का हिजरी सम्वत् प्रारम्भ होता है। धीरे-धीरे अरब के सारे कबीले मोहम्मद साहब की बातें मानने लगे। इस्लाम धर्म अरब से आरम्भ होकर विश्व में कई देशों में फैला।

अरबों ने अनेक देशों; जैसे:-जोर्डन, सीरिया, स्पेन, इराक, टर्की, ईरान और मिस्र, पर विजय प्राप्त की। उन्होंने भारत में सिन्ध पर विजय प्राप्त की और एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की।

मोहम्मद साहब की मृत्यु के पश्चात् अरब खलीफाओं का प्रभुत्व स्थापित हो गया। खलीफा पैगम्बर के उत्तराधिकारी के रूप में मुस्लिम जगत का धार्मिक गुरु तथा राजनीतिक प्रशासक होता था। चार प्रारम्भिक खलीफा अबूबकर, उमर, उस्मान तथा अली थे। उन्होंने 632 ई० से 661 ई० तक राज्य किया। खलीफाओं के पश्चात् उमयाद वंश ने 661 ई० से 750 ई० तक शासन किया। इनकी राजधानी दमिश्क थी। उमयाद वंश के पश्चात् अब्बासी वंश ने 750 ई० से 1258 ई० तक शासन किया। उन्होंने बगदाद को अपनी राजधानी बनाया। हारूअलरशीद जिसका दरबार विश्व में प्रसिद्ध था, बगदाद का खलीफा था।

अरब अपने राजनीतिक प्रभुत्व का विस्तार केवल इन देशों पर विजय प्राप्त करने के लिए ही नहीं, बल्कि इस्लाम धर्म को फैलाने और अपनी व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए करना चाहते थे।

3. अन्धकार युग में एक नई सामाजिक व्यवस्था सामन्तवाद का उदय हुआ। इस व्यवस्था के अन्तर्गत सामन्त कृषि भूमि के स्वामी होते थे। कृषक सामन्त (लॉर्ड) को श्रम सेवा प्रदान करते थे और बदले में वे (सामन्त) उन्हें सैन्य सुरक्षा देते थे। सामन्त अपनी भूमि का कुछ भाग वैसलों को दे देते थे जो सामन्तों की तुलना में कम शक्तिशाली होते थे। वैसलों को सामन्त की फौज में युद्ध करना पड़ता था। साधारण कृषकों को सर्फ कहा जाता था। इन्हें वैसल की भूमि पर कार्य करना पड़ता था। इस प्रथा के अन्तर्गत उपज का अधिकांश भाग सामन्तों के पास रहता था तथा कृषकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति बड़ी शोचनीय थी।

लोगों का प्रमुख धर्म ईसाई धर्म था। पादरी भी वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। समाज में पादरियों को भी उच्च स्थान प्राप्त था। अन्धकार युग में यूरोप व्यापार एवं वाणिज्य की दृष्टि से भी काफी पिछड़ा हुआ था। उस समय उस क्षेत्र के व्यापार पर अरबों का आधिपत्य था। अत: यूरोप के व्यापारियों को अरब

व्यापारियों के साथ स्पर्धा का सामना करना पड़ा। यूरोप के व्यापारियों एवं अरब व्यापारियों के बीच धार्मिक वैमनस्यता भी बढ़ी। इन धार्मिक युद्धों को कोड्स कहा जाता था। इस प्रकार यूरोपवासियों और अरबों के बीच सांस्कृतिक संबंध भी स्थापित हुए। अरब व्यापारियों के साथ-साथ अनेक यूरोप के देशों; जैसे- पुर्तगाल, फ्रांस, हॉलैण्ड, इंग्लैण्ड आदि देशों से व्यापारी भारत आए। इस प्रकार भारत के लोग यूरोपवासियों के सम्पर्क में आए।

## पाठ-2 : नए राजा और उनके राज्य

**क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-**

1. कन्नौज
2. राष्ट्रकूट का
3. चोल ने
4. अरबी

**ख. रिक्त स्थान भरो -**

1. केन्द्रीय एशिया के गौर राज्य
2. मदुरै में
3. गोपाल (750-770 ई०)
4. पृथ्वीराज चौहान

**ग. मिलान करो -**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | मिहिर भोज प्रथम | अ. | 836-885 ई० |
| 2. | गोपाल | ब. | 750-770 ई० |
| 3. | अमोध वर्ष प्रथम | स. | 814-878 ई० |
| 4. | सिंह विष्णु | द. | 565-600 ई० |
| 5. | पुरान्तक प्रथम | य. | 907-957 ई० |
| 6. | पृथ्वीराज चौहान | र. | 1179-1192 ई० |

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. पुरान्तक प्रथम (907-957 ई०) ने अपने पिता की साम्राज्यवादी नीति अपनाते हुए पाण्डयों को हराकर मदुरै को छीन लिया। उसने 'मदुरै कोण्डा वन' की उपाधि ग्रहण की।
2. ब्राहम्णों को उपहार मे दी गई भूमि को ब्रहम्देय कहते है।
3. पल्लव शासक कला और स्थापत्य (भवन निर्माण कला) के प्रेमी थे। महाबलिपुरम के रथ मन्दिर और समुद्रतटीय मन्दिर तथा कांची का केलाशनाथ मन्दिर पल्लवों की मन्दिर निर्माण कला के सबसे अच्छे उदाहरण हैं।
4. मुहम्मद गौरी केन्द्रीय एशिया के गौर राज्य का शासक था।

## ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. गुर्जर प्रतिहार, पाल तथा राष्ट्रकूट सदैव कन्नौज पर अपना नियन्त्रण करने तथा एक-दूसरे पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए संघर्ष करते रहते थे। उस समय कन्नौज पर अधिकार करना प्रभुसत्ता का प्रतीक था। कन्नौज के लिए इन तीनों वंशों का संघर्ष त्रिदलीय संघर्ष कहा जाता है।

2. राजा भोज इस राजवंश के प्रसिद्ध एवं शक्तिशाली राजा थे। 1836 ई० में कन्नौज पर विजय प्राप्त की और इसे अपनी राजधानी बनाया। उसकी साहित्य में विशेष रुचि थी एवं वह शिक्षित लोगों को प्रोत्साहन व संरक्षण देता था।

3. राजपूतों की उत्पत्ति विवादस्पद है। पाश्चात्य इतिहासकार इन्हें हूण, शक तथा कुषाण:-जैसी विदेशी जातियों के वंशज मानते हैं। कुछ भारतीय इतिहासकार उनकी उत्पत्ति को प्राचीन क्षत्रिय कुलों से जोड़ते हैं। पृथ्वीराज रासो के रचयिता चन्दबरदाई ने राजपूतों की उत्पत्ति के अग्निकुल सिद्धान्त से जोड़ा है। इस सिद्धान्त के अनुसार महर्षि वशिष्ट ने माउण्ट आबू पर यज्ञ किया। यज्ञ की वेदी से चार वीर पुरुष निकले। ये चार वीर क्रमश: परमार, प्रतिहार, चौहान तथा सौलंकी थे जिन्हें देश को विदेशी आक्रमण से बचाने के लिए रचा गया था। बाद में, राजपूतों के अनेक वंश उत्पन्न हुए। ये सभी सूर्यवंशी या चन्द्रवंशी थे।

4. राजराज और राजेन्द्र प्रथम द्वारा बनवाए गए तंजौर (तंजावूर) और गंगाई कोंड चोलपुरम के बड़े मन्दिर स्थापत्य और मूर्तिकला की दृष्टि से प्रसिद्ध हैं।

   चोल मन्दिर अक्सर अपने आस-पास विकसित होने वाली बस्तियों के केन्द्र बन गए थे। ये शिल्प उत्पादन के केन्द्र भी थे। ये मन्दिर शासकों और अन्य लोगों द्वारा दी गई भूमि से भी सम्पन्न हो गए थे। इस भूमि की उपज उन सारे विशेषज्ञों का निर्वाह करने से खर्च होती थी जो मन्दिर के आस-पास रहते और उसके लिए काम करते थे।

## च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. पाल वंश ने बंगाल तथा बिहार पर लगभग 400 वर्षों तक राज्य किया। गोपाल (750-770 ई०) पाल वंश का प्रथम शासक था। उसने शशांक की मृत्यु के पश्चात् उत्पन्न अशान्ति को शान्त किया। उसने अपने शासन काल में अन्त तक सम्पूर्ण बंगाल पर अपना अधिकार सुदृढ़ कर लिया। गोपाल के पश्चात् उसका पुत्र और उत्तराधिकारी धर्मपाल पाल वंश का राजा बना। उसने अपने राज्य का विस्तार गंगा के मैदान तक कर लिया।

उसने कन्नौज पर भी नियन्त्रण कर लिया। धर्मपाल की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र देवपाल गद्दी पर बैठा। उसने उड़ीसा तथा असम को जीत लिया। ग्यारहवीं शताब्दी में पाल शासकों को चोलों द्वारा हार का सामना करना पड़ा। बारहवीं सदी में पालों की शक्ति समाप्त हो गई।

2. राजपूतों की उत्पत्ति विवादस्पद है। पाश्चात्य इतिहासकार इन्हें हूण, शक तथा कुषाण:-जैसी विदेशी जातियों के वंशज मानते हैं। कुछ भारतीय इतिहासकार उनकी उत्पत्ति को प्राचीन क्षत्रिय कुलों से जोड़ते हैं। पृथ्वीराज रासो के रचयिता चन्दबरदाई ने राजपूतों की उत्पत्ति के अग्निकुण्ड सिद्धान्त से जोड़ा है। इस सिद्धान्त के अनुसार महर्षि वशिष्ट ने माउण्ट आबू पर यज्ञ किया। यज्ञ की वेदी से चार वीर पुरुष निकले। ये चार वीर क्रमश: परमार, प्रतिहार, चौहान तथा सौलंकी थे जिन्हें देश को विदेशी आक्रमण से बचाने के लिए रचा गया था। बाद में, राजपूतों के अनेक वंश उत्पन्न हुए। ये सभी सूर्यवंशी या चन्द्रवंशी थे।

3. बहुत से नए राजाओं ने शासकों के उच्च गुंजायमान शीर्षकों व उपाधियों, जैसे:-महाराजाधिराज (महान राजा) एवं त्रिभुवन चक्रवर्ती (तीन लोकों का स्वामी) इत्यादि को अपनाया। राजा सरकार एवं प्रशासन का मुखिया होता था। वह सैन्य बल का प्रधान सेनापति होता था फिर भी वह विभिन्न मंत्रियों एवं अधिकारियों की सलाह एवं सहायता लेता था। ये अधिकारी सामंत, सेनापति, राजस्व मंत्री, कोषाध्यक्ष, मुख्य न्यायाधीश एवं पुरोहित होते थे।

'सामंत' पराजित हुए राजा होते थे। पराजित होने के बाद यदि वह शासक की अधीनता स्वीकार कर लेता, तो उसको उसका राज्य वापस मिल जाता था। सामंत राजा को कर एवं उपहार भेंट करते थे। वे आवश्यकता होने पर राजा को सेना की टुकड़ी भी भेजते थे।

4. हर्षवर्धन के साम्राज्य के पतन के पश्चात् 10 वीं शताब्दी के मध्य काल में गुर्जर प्रतिहारों ने पश्चिमी भारत एवं उच्च गंगीय घाटियों में राज किया। हरिचंद्र नामक एक ब्राह्मण ने इस साम्राज्य को स्थापित किया था। राजा भोज इस राजवंश के प्रसिद्ध एवं शक्तिशाली राजा थे। 1836 ई० में कन्नौज पर विजय प्राप्त की और इसे अपनी राजधानी बनाया। उसकी साहित्य में विशेष रुचि थी एवं वह शिक्षित लोगों को प्रोत्साहन व संरक्षण देता था।

10वीं शताब्दी के अंत तक इस साम्राज्य का पतन हो गया और यह छोटे-छोटे राज्यों में बँट गया।

## पाठ-3 : दिल्ली सल्तनत

**क. सही विकल्प पर सही ( ✓ ) का चिह्न लगाओ-**

1. गुलाम वंश
2. बलबन
3. जलालुद्दीन ने
4. मुहम्मद बिन तुगलक ने
5. कुतुबुद्दीन ऐबक ने

**ख. रिक्त स्थान भरो -**

1. नासिरूद्दीन महमूद
2. जलालुद्दीन फिरोज
3. चंगेज खान
4. कोटला फिरोजशाह, हौजखास
5. इब्राहीम लोदी

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-**

1. ✗
2. ✓
3. ✓
4. ✓
5. ✓

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. इल्तुतमिश पहला तुर्क सुल्तान था, जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलवाये। उसने सल्तनत कालीन दो महत्वपूर्ण सिक्के ''चाँदी का टका'' लगभग (175 ग्रेन) तथा ''ताँबे का जीतल'' चलवाया।
2. कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली सल्तनत का पहला तुर्की गुलाम शासक था। मुहम्मद गौरी की मृत्यु के पश्चात् वह दिल्ली की गद्दी पर बैठा। उसने 1206 ई० मे गुलाम वंश की नीव डाली।
3. मंगोलों की सुरक्षा के लिए अलाउद्दीन ने पुराने किलो की मरम्मत करवायी तथा सीमावर्ती क्षेत्रें मे नए किले बनवाए।
4. 1206 ई० से 1526 ई० पू० तक का काल सल्तनत काल के नाम से जाना जाता है। सर्वप्रथम दिल्ली को किसी साम्राज्य की राजधाानी तोमर राजपूतों ने बनाया था।
5. उसने 1206 ई० मे गुलाम वंश की नीवं डाली। वह एक उदार शासक था। इसी कारण उसे 'लाखबख्श' के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि वह दान मे लाखों रुपए दिया करता था।
6. गुलाम वंश के शक्तिशाली सुल्तानों के नाम- कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, रजिया सुल्तान, नासिरुद्दीन महमूद एवं गयासुद्दीन बलबन।

**ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद उसका दामाद इल्तुतमिश दिल्ली की गद्दी पर बैठा और उसे ही उत्तर भारत में तुर्की

साम्राज्य का संस्थापक माना जाता है। उसे अपने शासन के दौरान अनेक बाह्य और आंतरिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

2. रजिया सुल्तान, इल्तुतमिश की बेटी थी तथा वह दिल्ली सल्तनत की प्रथम और एकमात्र महिला मुस्लिम शासिका थी। इल्तुतमिश ने रजिया को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था परंतु उलेमाओं और सरदारों ने इसका खुलकर विरोध किया तथा रजिया के भाई रुक्नुद्दीन को गद्दी पर बैठा दिया। परंतु वह एक कमजोर और अयोग्य शासक सिद्ध हुआ अत: उसे दिल्ली की गद्दी छोड़नी पड़ी और फिर रजिया गद्दी पर बैठी।

3. अलाउद्दीन खिलजी का जन्म 1266 ई० में हुआ था। उसका पूरा नाम शियाउद्दीन मसूद खिलजी था। वह अपने चाचा का वध करके 1296 ई० में दिल्ली सल्तनत के सिंहासन पर बैठा। अलाउद्दीन खिलजी में महान सैन्य प्रतिभा थी। वह सिकन्दर की भाँति विश्व विजय का स्वप्न देखता था। उसने मंगोल आक्रमणों से सुरक्षात्मक नीति को अपनाया।

4. दिल्ली सल्तनत के पतन के मुख्य कारण निम्न प्रकार थे–

   1. निरंकुश (अत्याचारी) और सैन्य जैसी सरकार के कारण सुल्तान अपनी प्रजा का विश्वास प्राप्त न कर सके।

   2. विस्तृत साम्राज्य के ऊपर सुल्तान उचित ढंग से शासन न कर सके।

   3. सल्तनत में विभिन्न वंशों के सुल्तानों के अपकर्ष ने सल्तनत को कमजोर बना दिया।

   4. सल्तनत में वित्तीय स्थायित्व कायम न रह सका।

   5. फिरोजशाह तुगलक के 1,80,000 दास राज्य पर बोझ बन गए थे।

   6. जागीर प्रणाली हानिकारक सिद्ध हुई।

   7. उत्तराधिकार के नियमों का अभाव भी सल्तनत के पतन का कारण बना।

   8. मंगोलों के आक्रमण को रोकने का कोई प्रबंध नहीं किया गया।

5. स्वयं कीजिए।

**च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –**

1. गुलाम वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने की। उसने दिल्ली में कुतुबमीनार, कुव्वतुल-इस्लाम मस्जिद तथा अजमेर (राजस्थान) में अढ़ाई दिन का झोंपड़ा नामक इमारतें भी

बनवाईं। प्रशासन विभाजन

| प्रशासन | जिम्मेदार व्यक्ति |
|---|---|
| केन्द्रीय शासन | |
| (कई इक्तों/प्रान्तों को मिलाकर) | सुल्तान |
| ↓ | ↓ |
| प्रान्त/इक्ता | इक्तादार |
| (कई सरगनों को मिलाकर) | |
| ↓ | ↓ |
| परगना (कई ग्राम मिलाकर) | परगनाधिकारी |
| ↓ | ↓ |
| ग्राम | मुखिया, पटवारी, चौकीदार |

कुतुबमीनार की शुरूआत ऐबक ने की थी परन्तु इसको पूरा इल्तुतमिश ने कराया। कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारत में एक नए राज्य की नींव अवश्य डाली पर उस राज्य को सुदृढ़ करने का अवसर उसे नहीं मिल पाया क्योंकि वह केवल 4 वर्ष तक ही राज्य कर सका।

2. **मुहम्मद बिन तुगलक की योजनाएँ**

**क. राजधानी परिवर्तन** – दक्षिणी राज्यों के प्रशासनिक नियंत्रण के लिए उसने 1327 ई० में अपनी राजधानी दिल्ली से दक्षिणी नगर देवगिरि (दौलताबाद) स्थानान्तरित कर ली परंतु वह इससे संतुष्ट नहीं हो सका और उसने इसे पुनः देवगिरि से दिल्ली स्थानान्तरित कर दिया। प्रजा आर्थिक और शारीरिक रूप से बहुत परेशान हुई। उसकी यह योजना लोकप्रिय न हो सकी।

**ख. दोआब में वृद्धि** – राज्य की आय बढ़ाने के लिए मुहम्मद बिन तुगलक ने गंगा और यमुना के बीच समृद्ध एवं उर्वरक भूमि 'दोआब' में कर बढ़ाने का एक प्रयोग किया। जिस समय इस कर में वृद्धि की गई, उस समय यहाँ भयानक अकाल पड़ा था। परन्तु बढ़े हुए कर की वसूली जारी रही। लोगों ने कर देने से इनकार कर दिया और वे विद्रोही हो गए। अतः यह योजना असफल हो गई।

**ग. सांकेतिक मुद्रा का चलाना** – मुहम्मद बिन तुगलक के समय दिल्ली सल्तनत की मुद्रा चाँदी के सिक्के थे। उधर उस समय दुनिया भर में चाँदी के उत्पादन में बहुत कमी आ रही

थी। इस कमी को पूरा करने के लिए सुल्तान ने चाँदी के सिक्कों के स्थान पर समान मूल्य के ताँबे के सिक्कों को जारी करने का हुक्म दिया। इन सिक्कों पर सुल्तान की मोहर भी नहीं लगी होती थी। जनता ने इसका नाजायज फायदा उठाया तथा अपने घरों में ताँबे के सिक्के ढालने लगी। यह जाली मुद्रा थी जिससे बाजार पट गया, परन्तु विदेशी व्यापारियों ने इसे लेने से मना कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि देश से चाँदी बड़ी मात्रा में विदेशों में पहुँच गई और राज्य कोषागार में जाली मुद्रा इकट्ठी हो गई। इस तरह से सुल्तान का वित्त पर किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं रहा। शाही खजाने में जाली मुद्रा का ढेर लग गया और सल्तनत का खजाना कंगाल हो गया।

3. सांकेतिक मुद्रा का चलाना – मुहम्मद बिन तुगलक के समय दिल्ली सल्तनत की मुद्रा चाँदी के सिक्के थे। उधर उस समय दुनिया भर में चाँदी के उत्पादन में बहुत कमी आ रही थी। इस कमी को पूरा करने के लिए सुल्तान ने चाँदी के सिक्कों के स्थान पर समान मूल्य के ताँबे के सिक्कों को जारी करने का हुक्म दिया। इन सिक्कों पर सुल्तान की मोहर भी नहीं लगी होती थी। जनता ने इसका नाजायज फायदा उठाया तथा अपने घरों में ताँबे के सिक्के ढालने लगी। यह जाली मुद्रा थी जिससे बाजार पट गया, परन्तु विदेशी व्यापारियों ने इसे लेने से मना कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि देश से चाँदी बड़ी मात्रा में विदेशों में पहुँच गई और राज्य कोषागार में जाली मुद्रा इकट्ठी हो गई। इस तरह से सुल्तान का वित्त पर किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं रहा। शाही खजाने में जाली मुद्रा का ढेर लग गया और सल्तनत का खजाना कंगाल हो गया।

   अपने शासन के अंतिम दिनों में सुल्तान गृह अशांति के कारण परेशान और दु:खी हो गया था। उसे भारत के उत्तरी और दक्षिणी भागों के विद्रोहों का सामना करना पड़ा। दक्षिण भारत में दो राज्यों विजयनगर और बहमनी का उदय हुआ तथा पूर्वी भारत का बंगाल राज्य स्वतंत्र हो गया। सिन्ध के विद्रोह का दमन करते हुए वह बीमार पड़ गया था। 1351 ई० में वह मृत्यु को प्राप्त हुआ।

4. सिकन्दर लोदी (1489 ई० -1517 ई०)

   बहलोल लोदी की मृत्यु के बाद उसका बेटा सिकन्दर लोदी 1489 ई० में दिल्ली की गद्दी पर बैठा। उसने बिहार और पश्चिम बंगाल को जीता तथा अपनी राजधानी दिल्ली से आगरा स्थानान्तरित कर दी। उसने आगरा नगर की स्थापना की। उसने ऐसा इसलिए किया जिससे पूरे राज्य पर आसानी से नियंत्रण रखा जा सके। उसकी मृत्यु बीमारी से हुई तथा उसे दिल्ली में

दफना दिया गया। उसका मकबरा नई दिल्ली में लोदी बाग में स्थित है।

इब्राहिम लोदी (1517 ई० - 1526 ई०)

सिकन्दर लोदी की मृत्यु के बाद उसका पुत्र इब्राहिम लोदी 1517 ई० में दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ। वह तुनक मिजाज और अत्याचारी प्रकृति वाला सुल्तान था। वह छोटी-छोटी बातों पर आग-बबूला हो जाया करता था। वह अमीरों से नाराज रहता था। कुछ अमीरों ने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया था तथा स्वयं को स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया था। अंत में उन्होंने काबुल के शासक बाबर को इब्राहिम लोदी पर आक्रमण के लिए आमंत्रित किया। 1526 ई० में पानीपत (हरियाणा) के मैदान में बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच भयंकर युद्ध हुआ। इब्राहिम लोदी मारा गया और बाबर दिल्ली का सुल्तान बन बैठा, और इस प्रकार भारत में मुगल वंश की नींव पड़ी। भारतीय इतिहास में यह युद्ध पानीपत के प्रथम युद्ध के नाम से जाना जाता है।

5. गयासुद्दीन बलबन, नासिरुद्दीन महमूद का सलाहकार था। वह एक योग्य तथा अनुभवी शासक था। उसने अपने शासनकाल में अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किए थे। उसने दिल्ली के पास स्थित जंगलों को साफ कराया तथा दिल्ली को सुरक्षा प्रदान करने के लिए पुलिस चौकियाँ स्थापित कीं। उसने मेवातियों का दमन किया। उसने अपने राज्य को मंगोलों के आक्रमणों से बचाने के प्रयास किए। उसने कानूनों को सख्ती से लागू किया। उसका विश्वास था कि पृथ्वी पर राजा (सुल्तान) ही ईश्वर का प्रतिनिधि है। उसने दो ईरानी रिवाजों 'पायबोस' और 'सिजदा' को लागू किया। सिजदा में आगन्तुक को सुल्तान के सम्मान में अपने सिर को झुकाकर माथे से जमीन को छूना पड़ता था जबकि पायबोस में आगन्तुक सुल्तान के पैरों को चूमता था। वह हमेशा न्याय के पक्ष में रहता था।

बलबन के मार्ग में सबसे मुख्य कठिनाई चंगेज खाँ के नेतृत्व में होने वाले मंगोल आक्रमण तथा विस्तार थे। इसलिए मंगोलों से अपनी रक्षा करने के लिए उसने आक्रमण के रास्ते में स्थित किलों की मरम्मत कराई तथा नए किलों का निर्माण कराया।

## पाठ-4 : अन्य क्षेत्रीय राज्य

**क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-**

1. मलिक सरवर
2. जैन-उल-अबोदीन को

3. मालवा का
4. मेवाड़ का
5. तुलुव वंश से

**ख. रिक्त स्थान भरो –**

1. 1484
2. सभी धर्मों, सम्मान करता
3. 1407 ई०, जफर खाँ
4. शिशौदिया वंश
5. हरिहर, बुक्का

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–**

1. ✓
2. ✓
3. ✓
4. ✓
5. ✓

**घ. मिलान करो –**

| | |
|---|---|
| 1. जौनपुर | अ. मलिक सरवर |
| 2. गुजरात | ब. राठौड़ |
| 3. बंगाल | स. इल्यास शाही |
| 4. मालवा | द. हुशांग शाह |
| 5. कश्मीर | य. जैन-उल-अबीदीन |

**ङ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. 1484 ई० मे बहलोल लोदी ने जौनपुर पर विजय प्राप्त की।
2. 1407 ई० मे जफर खाँ ने स्वयं को मुजफ्फरशाह के उपनाम से गुजरात का शासक घोषित कर दिया।
3. हरिहर एवं बुक्का राय दो भाइयों ने 1336 ई० मे विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की थी। वे वारंगल के उत्कृष्ट व कुलीन सदस्य थे।
4. बहमनी राज्य के उत्तराधिकारी दुर्बल थे जिस कारण यह पाँच स्वतन्त्र प्रदेशों में बँट गया–
   1. निजाम शाही द्वारा अहमदनगर
   2. आदिल शाही द्वारा बीजापुर
   3. कुतुबशाही द्वारा गोलकोंड़ा
   4. ईमाद शाही द्वारा बरार
   5. बरीय शाही द्वारा बीदर
5. प्रत्येक प्रांत मे एक गर्वनर प्रमुख होता था, जिसे तरुदार या आमिर कहते थे।

## ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. फिरोजशाह तुगलक के शासन काल में मलिक सरवर जौनपुर का गवर्नर था। उसने तुगलक शासक से अलग शासन की घोषणा कर दी एवं जौनपुर को अपनी राजधानी बना लिया। उसने शरकी वंश का आरम्भ किया। शरकी साम्राज्य अलीगढ़ से उत्तरी बिहार के दरभंगा तक तथा उत्तर में नेपाली सीमा से दक्षिण में बुंदेलखंड तक विस्तृत था। इब्राहीम शाह शरकी इस वंश का एक शक्तिशाली राजा था। 1484 ई० में बहलोल लोदी ने जौनपुर पर विजय प्राप्त की।

2. आरम्भिक मध्यकालीन युग में कश्मीर में हिंदू वंश का शासन था। चौदहवीं शताब्दी में, शाहमीर ने मुस्लिम वंश को आरम्भ कर दिया। जैनु-उल-अबीदीन जो 'बुदशाह' के नाम से प्रख्यात था, कश्मीर का महान शासक था। उसकी सत्ता ने एक लंबे समयंतराल तक शांति और समृद्धि के चिह्न कश्मीर में छोड़े हैं। अन्य मुस्लिम शासकों ने नापसंद होने के विपरीत उसके शासन काल के विपरीत, उसको हिंदू लोग पसंद करते थे। उसके शासन काल में एक संख्या में मंदिरों का जीर्णोद्धार किया गया। उसे विख्यात रूप में कश्मीर का अकबर कहते थे।

3. मारवाड़ पर राठोरों ने शासन किया। महाराजा ने जोधपुर शहर को प्राप्त कर वहाँ मेहरानगढ़ किले का निर्माण करवाया।

4. राणासाँगा मेवाड़ का महान एवं शक्तिशाली शासक था। उसने मालवा के राजा को पराजित किया। उसने लोदी सुल्तान की सेना को भी हराया था परंतु वह बाबर से खानवा की लड़ाई में पराजित हो गया था।

5. हरिहर एवं बुक्का राय दो भाइयों ने 1336 ई० में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की थी। वे वारंगल के उत्कृष्ट व कुलीन सदस्य थे। बाद में वे कंपीली (आधुनिक कर्नाटक) के साम्राज्य में मंत्री बने।

## च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. यह साम्राज्य राजा कृष्णदेव राय के देहांत के उपरांत दुर्बल हो गया। 1526 ई० में बीजापुर, गोलकोंडा एवं अहमदनगर के शासकों ने एक संगठित सेना बनाकर तालिकोट के युद्ध में विजयनगर की सेना को परास्त कर दिया। विजयनगर के पतन का यह सबसे मुख्य कारण था।

2. बंगाल एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र था। दिल्ली से अधिक दूर होने के कारण बंगाल ने इस स्वतंत्रता का पूर्ण आनंद लिया। चौदहवीं एवं पंद्रहवीं शताब्दियों में इल्या शाही एवं हुसैन शाही ने बंगाल पर शासन किया। एक नवीन एवं अलग

स्थापत्य कला के विभिन्न नमूने यहाँ देखने को मिलते हैं। बंगाल के सुल्तानों ने अपनी राजधानी 'गौर' का नवीन शैली में बनी उत्कृष्ट इमारतों से किया।

बंगाल के मंदिर में एक असाधारण विशेषता थी कि उनका दो छतों या चार छतों के ढाँचे में निर्माण हुआ था। ये एक चकोर चबूतरे पर निर्मित होते थे। जिनके अंदर छायादार स्थान बने थे। इनकी बाहरी दीवारें पक्की मिट्टी एवं नक्काशीदार खपरैलों से बनी थी।

3. फिरोजशाह बहमनी राज्य का एक बहुत शक्तिशाली राजा था। उसने गोंड राजा–नरसिंह राय को परास्त करके उसके क्षेत्रों पर विजय प्राप्त कर ली। उसने विजयनगर के राजा से रायचूर दोआब भी जीत लिया था।

फिरोजशाह एक विद्वान एवं उदार शासक था। वह कुरान, इस्लामी नियम, प्राकृतिक विज्ञान एवं साहित्य का अच्छा वेत्ता एवं वक्ता था। उसको विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं, जैसे:–फारसी, तेलुगू, कन्नड़ और मराठी का ज्ञान था। उसके शासन काल में दक्कन भारत का एक सांस्कृतिक केन्द्र बन गया था। वहाँ पर इरान, ईराक उत्तरी क्षेत्रों से विद्वानों, लेखकों, कवियों आदि को आमंत्रित किया जाता है।

## पाठ–5 : मुगल साम्राज्य

**क. सही विकल्प पर सही ( ✓ ) का चिह्न लगाओ–**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | पानीपत में | 2. | 1526–1712 ई० में |
| 3. | 1545 ई० में | 4. | बैरमखाँ |
| 5. | 1632 ई० में | 6. | गुरु तेगबहादुर |
| 7. | अकबर का | 8. | अकबर ने |

**ख. रिक्त स्थान भरो –**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | 1628 ई० | 2. | 1658 ई० |
| 3. | अबुल फजल | 4. | तांबे और सोने |
| 5. | व्यापार करने की | 6. | बाबर |

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | ✗ | 2. | ✓ |
| 3. | ✓ | 4. | ✗ |
| 5. | ✗ | | |

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. हुमायूँ एक मुगल शासक था। प्रथम मुगल सम्राट बाबर का पुत्र नसीरुद्दीन हुमायूँ (6 मार्च 1508–27 जनवरी, 1556) था।
2. बाबर का पूरा नाम, जहीरुद्दीन मुहम्मद था।
3. अकबर के दरबार के नौ रत्नों में से एक अबुल फजल ने अकबरनामा पुस्तक लिखी है।
4. बादशाह शाहजहाँ अकबर के पोते शाहजहाँ मुगल साम्राज्य के सबसे महान बादशाहों में से एक था। शाहजहाँ का जन्म 5 जनवरी 1592 को लाहौर में हुआ था।
5. शाहजहाँ द्वारा बनवाए गए कुछ भवनों, जैसे– दिल्ली में लाल किला और जामा मस्जिद का निर्माण कराया। उसकी इमारतें लाल बलुआ पत्थर तथा मकराना संगमरमर की बनी हैं।
6. सतनामी सम्प्रदाय की स्थापना 1657 ई० में नारनॉल में हुई। सतनामी भिक्षुओं जैसे कपड़े पहनते थे और अधिकांशत: कृषि और व्यापार से अपनी आय प्राप्त करते थे।
7. सिक्खों के अंतिम गुरु, गुरु गोविन्द सिंह ने सिक्ख सैनिकों को संगठित किया तथा उन्हे मुगलों के खिलाफ युद्व के लिए तैयार किया।
8. दीन–ए–इलाही 1582 ई० में मुगल सम्राट अकबर द्वारा एक समरूप धर्म था जिसमे सभी धर्मों के मूल तत्वों को डाला, इसमे प्रमुखत हिंदू एवं इस्लाम धर्म थे। इनके अलावा पारसी, जैन एवं ईसाई धर्म के मूल विचारों को भी सम्मलित किया गया था।

**ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. बाबर का पुत्र हुमायूँ 1530 ई० में गद्दी पर बैठा। जैसे ही वह गद्दी पर बैठा, उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उसके भाइयों–कामरान, हिन्दाल और असकरी सहित अफगानों ने मिलकर उसके सिंहासनारोहण का डटकर विरोध किया। बिहार का शक्तिशाली शासक शेरशाह सूरी और गुजरात का शासक बहादुरशाह भी उसके मार्ग में अड़चनें खड़ी कर रहे थे। इसके अतिरिक्त उसके सगे–संबंधी भी उसके शत्रु बन गए। उसके पिता ने उसे एक कमजोर और कंगाल राज्य दिया था। वह स्वयं भी खुद के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ क्योंकि उसे अधूरा कार्य छोड़ने की बुरी आदत थी।
2. अकबर ने मनसबदारी प्रथा प्रचलित की थी। मनसबदार साम्राज्य में बादशाह के कानून और आदेश लागू करते थे। इसके लिए उसे सैनिकों और सैन्य अधिकारियों को संगठित करना पड़ा।

उसने इस कार्य को संपन्न करने के लिए नई सैन्य व्यवस्था, जिसे मनसबदारी प्रथा कहते थे, को लागू किया। मनसबदार मुगल सेना में एक ओहदा या अधिकारी का पद होता था। मनसबदार को सेना में सैनिकों, हाथियों, घोड़ों, गाड़ियों और ऊँटों की एक निश्चित संख्या का प्रबंध सँभालना होता था। पूरी मुगल सेना में हजारों की संख्या में मनसबदार थे।

3. **जहाँगीर का व्यक्तित्व** :- उसने एक न्यायप्रिय शासक की छवि धारण करनी चाही थी। उसने न्याय व्यवस्था को पारदर्शी बनाने के लिए आगरा के किले के बाहर न्याय की जंजीर लटका रखी थी। कोई भी आदमी, जिसके साथ अन्याय हुआ हो, इस जंजीर को खींचकर अपनी फरियाद बादशाह तक पहुँचा सकता था। उसने अपने शत्रुओं को क्षमादान दे दिया।

जहाँगीर कला और साहित्य का संरक्षक था। वह स्वयं एक विद्वान था और उसने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' तुर्की भाषा में लिखी जिसमें उसने अपने जीवन की घटनाओं का वर्णन किया है। वह चित्रकला का भी शौकीन था। वह चित्रकला का पारखी था।

उसने अपने साम्राज्य को मजबूत और स्थायी बनाने के लिए राजपूतों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए। उसने साम्राज्य की सरकारी नौकरियों में राजपूतों को महत्त्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया। 1627 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

4. **अकबर के दरबार में नवरत्न**

| | |
|---|---|
| राजा टोडरमल | वित्त मंत्री |
| बीरबल | महान बुद्धिजीवी |
| मिया तानसेन | महान संगीतज्ञ |
| फैजल | कवि |
| अबुल फजल | अकबरनामा और आइन- ए-अकबरी का लेखक |
| राजा मान सिंह | मुख्य सेनापति एवं जनरल |
| अब्दुल रहीम खान-ए-खाना | कवि एवं बैरम खाँ का बेटा |
| फकीर-अजीरा-बिन | रहस्यवादी एवं सलाहकार |
| मुल्ला दो प्याजा | सलाहकार |

5. औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का पतन प्रारम्भ हो गया। उसके पतन के निम्नलिखित कारण थे-

1. मराठा जैसे स्वतंत्र राज्यों का उदय होना।

2. औरंगजेब की धार्मिक तथा दक्कन नीति।

3. अमीरों और राजाओं की वैभवपूर्ण तथा खर्चीली आदतें।

4. औरंगजेब की शिक्षा विरोधी नीति।

5. अत्यधिक विशाल साम्राज्य पर नियंत्रण न रख सकना।

6. अमीरों द्वारा सर्वाधिक लाभकारी जागीरों को विजित करने की लालसा।

7. किसानों और जमीदारों का असन्तुष्ट होना।

8. मुगल वंश के कमजोर और सुस्त उत्तराधिकारी।

9. 1739 ई० में नादिरशाह का आक्रमण।

मुगलवंश के अंतिम बादशाह बहादुरशाह जफर ने 1837 ई० से 1858 ई० तक शासन किया जिसे अंग्रेजों ने रंगून (बर्मा) में कैद करके रखा था और उसकी मृत्यु भी वहीं हुई।

**च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –**

1. **जहाँगीर और नूरजहाँ**

1611 ई० में जहाँगीर ने नूरजहाँ के साथ विवाह किया। उसका बचपन का नाम मेहरुन्निसा था जो सम्राट के सामन्त इतमाद-उद-दौला की बेटी थी। वह शेर अफगान की विधवा थी। उसकी बुद्धि एवं सुन्दरता के कारण उसे जहाँगीर द्वारा नूरजहाँ की उपाधि दी गई जिसका अर्थ होता है-विश्व प्रकाश।

अनेक उल्लेखों के अनुसार नूरजहाँ का सम्राट पर बहुत नियन्त्रण था और वह शाही राजनीति में एक महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में उभरी। उसके पिता को शाही दीवान बना दिया गया। जबकि उसका भाई आसफ खाँ एक प्रमुख मनसबदार बना। रानी के परिवार की मजबूत होती स्थिति उस समय और भी मजबूत हो गई जब 1612 ई० में आसफ खाँ की बेटी अर्जुमंद बानो (भावी मुमताज महल) का विवाह जहाँगीर के दूसरे बेटे और युवराज खुर्रम के साथ हो गया।

नूरजहाँ, उसके पिता, भाई और राजकुमार खुर्रम एक दुर्जेय शक्ति के रूप में उभरे जो कम-से-कम एक दशक तक कायम रही लेकिन यह शक्ति उस समय विघटित हो गई जब सम्राट बीमार पड़ा और नूरजहाँ ने सत्ता सँभाली और राजकुमार खुर्रम से उसका टकराव हुआ। अब नूरजहाँ ने अपने पिछले पति की बेटी का विवाह जहाँगीर के सबसे छोटे बेटे से कर दिया और इस प्रकार सिंहासन का एक और दावेदार खड़ा कर दिया, जो उसके ज्यादा नियन्त्रण में था।

2. **राजनीतिक नीतियाँ**

अकबर जानता था कि वह राजपूतों के समर्थन एवं सहयोग के बिना संपूर्ण भारत पर शासन नहीं कर सकता। इसलिए अकबर ने उन्हें पराजित करने के उपरांन्त भी उनका शोषण नहीं किया वरन् उनके साथ आदर के साथ पेश आया। उसने बहुत से राजपूत राजाओं को उनके प्रदेशों में शासन जारी रखने की अनुमति दी। उसने राजपूत राजकुमारी जोधाबाई से विवाह करके राजपूतों के साथ अपने संबंध सबल कर लिए अकबर ने राजपूत सरदारों को अपने शासन में उच्च पद सौंपे थे। राजा मानसिंह और राजा बीरबल सबसे विश्वसनीय राजपूत सरदार थे।

**अकबर की धार्मिक नीति**

अकबर एक उदार हृदय का राजा था। वह सभी धर्मों का समान आदर करता था। हिंदुओं का विश्वास प्राप्त करने के लिए उसने सहनशीलता एवं आपसी समन्वयता की नीति को अपनाया।

उसने फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना का निर्माण कराया जो अपनी धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाता है। इबादतखाने में वह सभी धर्मों के संतों के उपदेशों को सुना करता था। 1582 ई० में उसने एक नया धर्म दीन-ए-इलाही चलाया जो विभिन्न धर्मों जैसे हिन्दू, जैन, इस्लाम तथा ईसाई धर्मों के सार को लेकर प्रतिपादित किया गया था। अकबर ने शांति के सिद्धांतों की नीति सुलहकुल को भी लागू किया ताकि जनता के सहयोग से विशाल साम्राज्य का प्रशासन बिना किसी अड़चन के चलाया जा सके। उसकी नीति पर सूफी और भक्तिकालीन संतों के उपदेशों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस नीति के कारण ही अकबर ने हिन्दुओं और पारसियों के त्योहारों, उत्सवों, रीति-रिवाजों को अंगीकार करना प्रारम्भ कर दिया था। लोगों को अपनी, पसंद के अनुसार आराधना करने की स्वतंत्रता थी। हिंदुओं को अपने तीर्थ स्थानों पर जाने हेतु कर का भुगतान करना होता था जिसे जजिया कर कहते थे। अकबर ने 1562 ई० में तीर्थ स्थल एवं 1564 ई० में जजिया कर समाप्त कर दिया।

अकबर ने अपने महल में जोधाबाई के लिए भगवान कृष्ण का मंदिर भी बनवाया था।

उसने फतेहपुर सीकरी स्थित महल में तीनों रानियों (मुसलमान, हिन्दू, इसाई) के लिए क्रमशः मस्जिद, मंदिर और चर्च का निर्माण कराया।

3. अकबर तब कलानौर में था जब हुमायूँ की मृत्यु हुई। हेमू ने

हुमायूँ की मृत्यु के उपरांत दिल्ली और आगरा पर कब्जा कर लिया था। अकबर तब केवल 13 वर्ष का था जब अकबर को दिल्ली-आगरा का शासक घोषित कर दिया गया। बैरम खाँ अकबर का राज्याधिकारी नियुक्त किया गया। 1556 ई० में बैरम खाँ के नेतृत्व में अकबर की सेनाओं और हेमू के बीच पानीपत में भयंकर युद्ध हुआ। यह युद्ध पानीपत के द्वितीय युद्ध के नाम से जाना गया। इस युद्ध में हेमू पराजित हुआ और वह मरा जाना गया जिससे मुगलों का दिल्ली और आगरा पर कब्जा हो गया। कुछ वर्षों उपरांत अकबर ने बैरम खाँ की संरक्षकता समाप्त कर दी और स्वयं सत्ता सँभाल ली तब उसने ग्वालियर, अजमेर, जौनपुर पर विजय हासिल की।

अकबर अपना साम्राज्य विस्तार करना चाहता था। वह यह भी जान गया था कि राजपूत बहुत बहादुर हैं, अतः उसने इसके लिए उसने राजपूतों से मित्रता का हाथ बढ़ाया। उसने उन्हें विश्वास दिलाया कि यदि वे उसकी अधीनता स्वीकार कर लें, तो अपना राजपाठ शांतिपूर्वक चला सकते हैं, जबकि उसने विरोधी राजपूत शासकों के साथ युद्ध भी किए। 1568 ई० में उसने चित्तौड़ पर फिर 1569 ई० में, रणथंभौर पर जीत हासिल की। 1576 ई० में अकबर ने हल्दीघाटी के युद्ध में राणा प्रताप को पराजित करने की कोशिश की परंतु राणा भीषण युद्ध करते हुए बुरी तरह घायल हुए एवं उन्हें परिवार सहित जंगल में आश्रय लेना पड़ा। उनका प्रसिद्ध घोड़ा चेतक उन्हें अपनी आखिरी साँस तक युद्ध के मैदान में खतरे से बचाता हुआ जंगल में ले गया था। राणा प्रताप ने प्रण किया था कि वे जब तक मेवाड़ को वापस नहीं ले लेंगे वह घास की रोटी खाँएगे, जमीन पर सोएंगे और सभी सुखों का त्याग कर देंगे। राणा ने बीस वर्षों के संघर्ष में, पूर्व में उड़ीसा, पश्चिम गुजरात एवं बंगाल के भागों पर विजय प्राप्त की। उसने मध्य भारत के विशाल भागों को भी अपने राज्य में मिला लिया। उत्तर-पश्चिम में राणा ने कश्मीर, सिंधु, काबुल एवं कंधार पर विजय हासिल की। दक्कन में उसने बरार, खानदेश एवं अहमदनगर के भागों को अपने नियंत्रण में ले लिया।

4. **जहाँगीर का व्यक्तित्व** :- उसने एक न्यायप्रिय शासक की छवि धारण करनी चाही थी। उसने न्याय व्यवस्था को पारदर्शी बनाने के लिए आगरा के किले के बाहर न्याय की जंजीर लटका रखी थी। कोई भी आदमी, जिसके साथ अन्याय हुआ हो, इस जंजीर को खींचकर अपनी फरियाद बादशाह तक पहुँचा सकता था। उसने अपने शत्रुओं को क्षमादान दे दिया।

जहाँगीर कला और साहित्य का संरक्षक था। वह स्वयं एक

विद्वान था और उसने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' तुर्की भाषा में लिखी जिसमें उसने अपने जीवन की घटनाओं का वर्णन किया है। वह चित्रकला का भी शौकीन था। वह चित्रकला का पारखी था।

उसने अपने साम्राज्य को मजबूत और स्थायी बनाने के लिए राजपूतों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए। उसने साम्राज्य की सरकारी नौकरियों में राजपूतों को महत्त्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया। 1627 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

5. भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना बाबर ने की थी। बाबर जब मध्य एशिया के फरगाना राज्य पर शासन कर रहा था। उसी काल में लोदी शासक दिल्ली सल्तनत पर शासन कर रहे थे।

अफगान सरदार दौलत खान ने बाबर को भारत आने एवं इब्राहिम लोदी को पराजित करने का निमंत्रण दिया।

1526 ई० में बाबर एवं इब्राहिम लोदी के बीच पानीपत में एक भीषण युद्ध हुआ। यद्यपि इब्राहिम लोदी के पास बाबर से कई गुना अधिक बड़ी सेना थी परंतु वह बाबर से पराजित हो गया। बाबर के पास एक युद्धक घुड़सवारों की फौज एवं सक्षम तोपें थीं। बाबर ने दिल्ली एवं आगरा पर विजय प्राप्त कर ली।

बाबर ने 1527 ई० में मेवाड़ के शासक राणा सांगा को आगरा के निकट खानवा के युद्ध में पराजित किया। इस लड़ाई ने दिल्ली-आगरा प्रदेश में बाबर की स्थिति को और मजबूत कर दिया। 1528 ई० में उसने राजपूतों को चंदेरी में पराजित किया। बाबर ने अफगान प्रमुखों को भी घाघरा में पराजित किया। सन् 1530 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

बाबर मुगल साम्राज्य का एक अच्छा बुद्धिमान सेनापति था और वह फारसी, तुर्की एवं अरबी भाषाओं का विद्वान भी था। उसकी आत्मकथा को बाबरनामा या तुजुक-ए-बाबरी कहा जाता है।

## पाठ-6 : स्मारक

**क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-**

1. ओड़िशा
2. कुतुबुद्दीन ऐबक ने
3. 22 वर्ष
4. 378
5. कश्मीर

**ख. मिलान करो –**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | जहाँगीर | अ. | अकबर का मकबरा |
| 2. | शाहजहाँ | ब. | आगरा का किला |
| 3. | अकबर | स. | सीकरी |
| 4. | बाबर | द. | मोती मस्जिद |

**ग. रिक्त स्थान भरो –**

1. जीमखाना
2. पुरी
3. मौ० आदिलशाह
4. राजा राजेश्वर
5. वर्ताकार अलाई दरवाजा अथवा कुश्क-ए-शिकार

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. स्मारकों को तीन भागों मे बाँटा गया है-
   1. पूर्व मध्यकालीन स्मारक
   2. सल्तनतकालीन स्मारक
   3. मुगलकालीन स्मारक
2. अलाई दरवाजा अलाउद्दीन द्वारा बनवाया गया था।
3. शहाजहाँ ने अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल की स्मृति मे ताजमहल का निर्माण करवाया था। ताजमहल स्थापत्य कला की गरिमा को दर्शाता है।
4. कुतुबमीनार भारतीय इस्लामी स्थापत्य का बेजोड़ नमूना है इसकी ऊँचाई 72.5 मीटर है एवं इसमे 378 सीढियाँ है।

**ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. दक्षिण भारत में पल्लव, पांडवों एवं चोलों ने बहुत विशाल एवं प्रसिद्ध मंदिरों का निर्माण करवाया। पल्लव राजाओं ने काँची में कैलाशनाथ मंदिर एवं महाबलीपुरम में शोर मंदिरों का निर्माण कराया था।
2. ऐतिहासिक इमारतों को स्मारक कहते हैं। स्मारक पूर्व मध्यकालीन युग की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक जानकारियों का अच्छा स्रोत हैं। इस काल में एक बड़ी संख्या में स्मारकों का निर्माण हुआ था। इसलिए हमारे पास इस काल की अधिकतम जानकारियाँ उपलब्ध हैं।

   राजाओं ने किले एवं महलों का निर्माण सुरक्षा के उद्देश्य से करवाया एवं मंदिर और मस्जिद आदि बनवाकर भगवान के प्रति अपनी श्रद्धा को प्रस्तुत किया।
3. अलाउद्दीन खिलजी ने कुतुबमीनार के पास अलाई दरवाजा

बनवाया था। यह लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है। तुगलक शासकों ने विशाल महलों का निर्माण करवाया जिसे तुगलकाबाद कहा गया। फिरोज तुगलक ने एक हौज खास में सैरगाह का निर्माण करवाया जिसके चारों ओर एक विशाल झील बनवाई। उसने फिरोजशाह कोटला का भी निर्माण करवाया जो आज खेल के एक मैदान के रूप में प्रसिद्ध है।

4. उत्तरी भारत में मंदिरों की नागर शैली बहुत प्रसिद्ध थी। चंदेलों ने खजुराहों में अनेक मंदिरों का निर्माण कराया जिनमें पार्श्वनाथ मंदिर, विश्वनाथ मंदिर और कंदरिया महादेव मंदिर प्रमुख हैं।

   उड़ीसा के प्रसिद्ध मंदिरों में मुक्तेश्वर मंदिर एवं लिंगराज मंदिर जोकि भुवनेश्वर में है, सम्मिलित हैं।

5. भारतीय शैलियों को अपनाया और भारतीय इस्लामी जैसी नई स्थापत्य शैली को शुरू किया। मस्जिदों, किलों, महलों एवं इमारतों का निर्माण इस शैली में किया गया। कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में कुतुबमीनार के पास प्रथम मस्जिद कुव्बत-उल-इस्लाम नाम से बनवाई। उसने अजमेर में अढ़ाई दिन का झोंपड़ा नामक मस्जिद भी बनवाई।

   मीनार को लाल बलुआ पत्थर से बनाया गया, जिस पर कुरान की आयतों की एवं फूल बैलों की महीन नक्काशी की गई है। कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुतुबमीनार का निर्माण आरम्भ कराया।

**च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -**

1. मुगल काल में स्थापत्य कला के एक नवीन युग का आरम्भ हुआ। इस काल के स्मारक पूर्वकालीन के स्मारकों से अधिक विशाल एवं उत्कृष्ट थे। यह सब मुगलों के दीर्घकालीन राज्य व अधिक धन खर्च करने के कारण संभव हुआ था। मुगल काल में तुर्की एवं ईरानी संस्कृति को भारतीय परंपराओं के साथ जोड़ दिया था। मुगलों ने मस्जिदों, किलों, दरवाजों, महलों, गुंबदों एवं बगीचों का निर्माण करवाया। उन्होंने बहते जलाशयों के साथ सुंदर बगीचों का निर्माण करवाया। लाहौर का शालीमार बाग, कश्मीर का विशाल बाग, पंजाब का पिंजौर गार्डन एवं अन्य कुछ प्रसिद्ध बाग-बगीचे हैं।

   अकबर ने आगरा, सीकरी एवं धौलपुर में महलों का निर्माण करवाया। उसने लाल बलुआ पत्थर से आगरे के किले का निर्माण करवाया एवं फतेहपुर सीकरी में भी महल बनवाए। अकबर के शासन काल में फारसी, मध्य एशिया एवं प्रांतीय क्षेत्रों के स्थापत्य मिश्रण भली भाँति मिलते हैं।

2. तेरहवीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद भारत में एक नवीन स्थापत्य युग का आरम्भ हुआ। उन्होंने कुछ

भारतीय शैलियों को अपनाया और भारतीय इस्लामी जैसी नई स्थापत्य शैली को शुरू किया। मस्जिदों, किलों, महलों एवं इमारतों का निर्माण इस शैली में किया गया। कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में कुतुबमीनार के पास प्रथम मस्जिद कुव्बत-उल-इस्लाम नाम से बनवाई। उसने अजमेर में अढ़ाई दिन का झोंपड़ा नामक मस्जिद भी बनवाई।

मीनार को लाल बलुआ पत्थर से बनाया गया, जिस पर कुरान की आयतों की एवं फूल बेलों की महीन नक्काशी की गई है। कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुतुबमीनार का निर्माण आरम्भ कराया परंतु उसके पूरा होने से पहले उसकी मृत्यु हो गई। बाद में इल्तुतमिश ने उसका निर्माण करवाया। कुतुबमीनार भारतीय इस्लामी स्थापत्य का बेजोड़ नमूना है। इसकी ऊँचाई 72.5 मीटर है एवं इसमें 378 सीढ़ियाँ हैं। यह लाल बलुई पत्थर एवं संगमरमर से बनी है एवं लिखित स्तम्भ लेखों और नक्काशी से सुसज्जित है। इसका यह नाम प्रसिद्ध चिश्ती संत ''शेख कुतुबुद्दीन काकी'' पर रखा गया।

3. कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुतुबमीनार का निर्माण आरम्भ कराया परंतु उसके पूरा होने से पहले उसकी मृत्यु हो गई। बाद में इल्तुतमिश ने उसका निर्माण करवाया। कुतुबमीनार भारतीय इस्लामी स्थापत्य का बेजोड़ नमूना है। इसकी ऊँचाई 72.5 मीटर है एवं इसमें 378 सीढ़ियाँ हैं। यह लाल बलुई पत्थर एवं संगमरमर से बनी है एवं लिखित स्तम्भ लेखों और नक्काशी से सुसज्जित है। इसका यह नाम प्रसिद्ध चिश्ती संत ''शेख कुतुबुद्दीन काकी'' पर रखा गया। मीनार को लाल बलुआ पत्थर से बनाया गया, जिस पर कुरान की आयतों की एवं फूल बेलों की महीन नक्काशी की गई है।

कुतुबमीनार यूनेस्को विश्व पैतृक धरोहर स्थल है।

## पाठ-7 : परमात्मा के लिए भक्ति मार्ग

**क. सही विकल्प पर सही ( ✓ ) का चिह्न लगाओ-**

1. शिव की
2. ये दोनों
3. तमिलनाडु में
4. दर्जी
5. राजपूत राजकुमारी

**ख. रिक्त स्थान भरो -**

1. शिव
2. श्री हरि के अवतार
3. रविदास
4. रामानन्द जी
5. आदि ग्रंथ

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–**

1. ✗ 2. ✓
3. ✓ 4. ✓
5. ✗

**घ. लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. प्रारम्भिक मध्यकालीन युग में शंकराचार्य एवं रामानुज ने दक्षिण भारत में भक्ति का संदेश फैलाया। शंकराचार्य का जन्म केरल में हुआ था तथा उन्होंने सर्व शक्तिमान ईश्वर एवं प्रत्येक मनुष्य के एक होने पर उपदेश दिया था। मोक्ष का मार्ग ज्ञान था। उन्होंने सीखने एवं उपासना के चार केन्द्र (मठ) बद्रीनाथ, पूरी, द्वारका एवं शृंगेरी में स्थापित किए। बाद में ये मठ महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थल केन्द्रों में विकसित हो गए।

2. संत कबीर भक्ति आंदोलन के सबसे महान संत कवि थे। उनका जन्म काशी में हुआ था। कबीर व्यवहार से एक जुलाहा थे और उनका विश्वास था कि ईश्वर एक है जिसके अनेक नाम हैं। किवदंती के अनुसार कबीर एक ब्राह्मण विधवा के पुत्र थे जिसने उनको जन्म के पश्चात् त्याग दिया था और उनका भरण–पोषण एक मुस्लिम जुलाहे के परिवार में हुआ था। उन्होंने अपना जीवन एक जुलाहे के रूप में आरम्भ किया परंतु कुछ समयोपरांत वह हिंदू और मुस्लिम संतों के संपर्क में आए। उन्होंने सबको प्रेम एवं भाई–चारे का संदेश दिया। उन्होंने कभी जाति प्रथा एवं छूआछूत में विश्वास नहीं किया। वह मूर्ति पूजा, परंपराओं, नदियों में डुबकी एवं तीर्थ यात्रा के विरुद्ध थे। अंधविश्वासों के लिए उन्होंने ब्राह्मणों और काजियों का खंडन किया।

3. गुरुनानक देव का जन्म तलवंडी (अब पाकिस्तान में) में रावी नदी के किनारे सन् 1469 ई० में हुआ था। उनका विश्वास था कि ईश्वर एक है और उसे निश्छल प्रेम एवं समर्पण से पाया जा सकता है। उन्होंने लोगों को ईमानदारी से जीवन जीने तथा औरों की सहायता करने का संदेश दिया। उन्होंने जाति एक वर्ण भेद को नकारा उन्होंने एक रसोई (लंगर) की प्रथा का प्रचलन किया।

**ङ. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –**

1. सल्तनत काल में एक संख्या में मुस्लिम संत भारत आए और उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में बस गए। सूफी संत भी प्रेम, समर्पण, दयालुता एवं दूसरों के साथ सामंजस्य को भी ईश्वर प्राप्ति का मार्ग मानते थे। सूफियों ने भी बहुत–से 'सिलसिले'

बनाए 13वीं शताब्दी तक 12 सिलसिले बने जिनका नाम उनके प्रर्वतकों के नाम पर पड़ा। कुछ विख्यात सिलसिले हैं-चिश्ती, फिरदोसियाँ, सुहरावर्दी, कुब्रावेइया, औडिरिया आदि। भारत में इनका बहुत प्रभाव था।

सूफी संत खानगाह में रहते थे। सभी धर्मों के अनुयायी संत का आशीर्वाद लेने इस खानगाह में आया करते थे। राजा एवं अन्य राजसी सदस्य भी खानगाह आते थे। तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दियों में भारत में चिश्ती सिलसिला बहुत लोकप्रिय था। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती सिलसिला के महान संत थे।

अजमेर में उनकी दरगाह एक प्रसिद्ध तीर्थ केन्द्र है। इस सिलसिले के अन्य प्रसिद्ध संतों में दिल्ली के कुतुबुद्दीन बख्तयार काकी, पंजाब के बाबा फरीद और दिल्ली के ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया एवं नसीरुद्दीन चिराग थे। जो खानगाह प्रमुख था उसे पीर या सूफी सन्त कहते थे एवं उनकी कब्र के दरगाह और तीर्थ केन्द्र बन जाते थे।

सूफी सन्त ध्यान एवं भगवान के नाम की तपस्या (जिक्र) में विश्वास करते थे। वे सभी धर्मों का सम्मान करते थे और साधारण जीवन में विश्वास करते थे।

2. सूफी संत खानगाह में रहते थे। सभी धर्मों के अनुयायी संत का आशीर्वाद लेने इस खानगाह में आया करते थे। राजा एवं अन्य राजसी सदस्य भी खानगाह आते थे। तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दियों में भारत में चिश्ती सिलसिला बहुत लोकप्रिय था। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती सिलसिला के महान संत थे।

अजमेर में उनकी दरगाह एक प्रसिद्ध तीर्थ केन्द्र है। इस सिलसिले के अन्य प्रसिद्ध संतों में दिल्ली के कुतुबुद्दीन बख्तयार काकी, पंजाब के बाबा फरीद और दिल्ली के ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया एवं नसीरुद्दीन चिराग थे। जो खानगाह प्रमुख था उसे पीर या सूफी सन्त कहते थे एवं उनकी कब्र के दरगाह और तीर्थ केन्द्र बन जाते थे।

सूफी सन्त ध्यान एवं भगवान के नाम की तपस्या (जिक्र) में विश्वास करते थे। वे सभी धर्मों का सम्मान करते थे और साधारण जीवन में विश्वास करते थे।

## पाठ-8 : 18वीं शताब्दी में राजनीतिक गठन

**क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-**

1. मराठों ने
2. निजाम-उल-मुल्क
3. जहाँदारशाह
4. अवध का
5. गुरु गोविन्द सिंह ने

**ख. मिलान करो –**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | हैदराबाद | अ. | चिन क्लिक खाँ |
| 2. | अवध | ब. | सआदत खाँ |
| 3. | बंगाल | स. | मर्शीद खाँ |
| 4. | मैसूर | द. | हैदरअली |

**ग. रिक्त स्थान भरो –**

1. कोहिनूर हीरा, रतन जड़ित मयूर सिंहासन
2. मैसूर का शेर
3. पूना, फरवरी 1627
4. पानीपत के मैदान में मराठों और उसके बीच
5. 1699 ई०

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | ✓ | 2. | ✓ |
| 3. | ✓ | 4. | ✗ |
| 5. | ✓ | | |

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. सिक्खों के दसवें तथा अन्तिम गुरु गुरु गोविन्द सिंह ने सिक्खों को 1699 ई० में खालसा के रूप में संगठित किया।
2. औरंगजेब की 1707 ई० में मृत्यु हो गई, उसकी मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र और राजकुमार मुअज्जम बहादुर शाह प्रथम की उपाधि के साथ मुगल सिंहासन पर बैठा।
3. सैय्यद भाइयों को हैदर खाँ ने हुसैन अली को मारने का बीड़ा उठाया। दरबार में याचिका पढ़ते समय हैदर खाँ द्वारा हुसैन अली की छुरा मारकर हत्या कर दी गई।
4. मुगल वंश का 14 वाँ बादशाह था। उसने लम्बे समय 1719 से 1748 ई० तक मुगल साम्राज्य पर शासन किया। रफीकद्वौला की मृत्यु के बाद सैय्यद बन्धुओं ने उसको गद्दी पर बैठाया था।
5. नादिरशाह ने दिल्ली को लूटने के बाद वह अपने साथ ईरान की अकूत संपत्ति ले गया। वह अपने साथ कोहिनूर हीरा और रत्नजड़ित मयूर सिंहासन भी ले गया।
6. 1674 ई० मे शिवाजी ने स्वयं को राजा घोषित कर दिया एवं छत्रपति की उपाधि धारण की।

**ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. सैय्यद भाइयों की मदद से फारुखसियार मुगल साम्राज्य का

शासक बन बैठा परंतु वह उनके हाथों की कठपुतली बन गया। उन्हें शासक निर्माता के नाम से जाना जाता है। उन्होंने फारुखसियार को सत्ता से हटाकर नया शासक बना दिया।

2. फारुखसियार के बाद मोहम्मदशाह सम्राट बना। उसने अपने रास्ते से सैय्यद भाइयों का सफाया करने में अपने कुछ सहयोगियों की मदद ली। उसने 1720 ई० से 1747 ई० तक शासन किया। इसी काल में हैदराबाद और अवध अन्य स्थानीय साम्राज्य मुगल साम्राज्य से स्वतंत्र होकर राज्य बन गए।

3. 1674 ई० में शिवाजी ने स्वयं को राजा घोषित कर दिया एवं छत्रपति की उपाधि धारण की। 1680 ई० में उनकी मृत्यु हो गई। शिवाजी एक सफल प्रशासक थे उनकी आठ मंत्रियों की एक परिषद् थी जिसे अष्टप्रधान कहते थे और वह सलाह देती थीं। इसका विवरण निम्न प्रकार है: -

   1. पेशवा (परिषद् प्रमुख एवं सामान्य प्रबंधन का प्रभारी)
   2. अमात्य या मूजमदार (वित्त प्रभारी)।
   3. पंत सचिव (सामान्य सचिव)
   4. सुमंत (विदेशी प्रभारी)
   5. सेनापति (सेना का प्रमुख)
   6. न्यायाधीश (न्याय प्रभारी)
   7. मंत्री (मन्त्रणा प्रमुख)
   8. दंडाध्यक्ष (धार्मिक मामलों का प्रभारी)

4. स्वयं कीजिए।

5. हैदरअली मैसूर का महान प्रशासक एवं सेनापति था। उसने 1761 ई०-1782 ई० तक शासन किया। उसके पुत्र टीपू सुल्तान ने 1782 ई०-1799 ई० तक शासन किया और उसने मैसूर को बहुत शक्तिशाली बना दिया था। पुर्तगालियों की सहायता से हैदरअली ने डिंडीगुल में एक आधुनिक शस्त्रागार की स्थापना की।

6. अहमदशाह अब्दाली - अफगान सरदार अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर कई बार आक्रमण किया। वह एक हमलावर था। 1761 ई० में पानीपत के मैदान में मराठों और उसके बीच एक युद्ध लड़ा गया। इस युद्ध का परिणाम यह हुआ कि मराठा शक्ति का अंत हो गया।

**च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न** -

1. शिवाजी के नेतृत्व में मराठे काफी संगठित हुए। शिवाजी का जन्म पूना में फरवरी 1627 ई० में हुआ था। उनका

लालन-पालन उनकी माँ जीजाबाई ने किया था। उनके पिता शाहजी भौंसले बीजापुर साम्राज्य में एक उच्चाधिकारी थे। शिवाजी एक विशाल साम्राज्य स्थापित करना चाहते थे इसके लिए, उन्होंने पहाड़ी लोगों को एकत्रित कर गुरिल्ला लड़ाई के लिए प्रशिक्षित किया। शिवाजी ने तोरण के किले पर कब्जा कर लिया। उन्होंने बीजापुर की सेना को परास्त कर वहाँ के सैन्य प्रमुख अफजल खान का वध किया।

1663 ई० में उन्हें पकड़ने के लिए शाइस्ता खाँ को भेजा, परंतु एक रात इन्होंने मुगल शिविर में घुसकर शाइस्ता खाँ को घायल कर दिया। तब इन्होंने मुगल सेना को परास्त किया। तब दोबारा औरंगजेब ने शिवाजी को हराकर बंदी बना लिया लेकिन शिवाजी बचकर वापस महाराष्ट्र पहुँच गए।

1674 ई० में शिवाजी ने स्वयं को राजा घोषित कर दिया एवं छत्रपति की उपाधि धारण की। 1680 ई० में उनकी मृत्यु हो गई। शिवाजी एक सफल प्रशासक थे उनकी आठ मंत्रियों की एक परिषद् थी जिसे अष्टप्रधान कहते थे और वह सलाह देती थीं। इसका विवरण निम्न प्रकार है: -

1. पेशवा (परिषद् प्रमुख एवं सामान्य प्रबंधन का प्रभारी)
2. अमात्य या मूजमदार (वित्त प्रभारी)।
3. पंत सचिव (सामान्य सचिव)
4. सुमंत (विदेशी प्रभारी)
5. सेनापति (सेना का प्रमुख)
6. न्यायाधीश (न्याय प्रभारी)
7. मंत्री (मन्त्रणा प्रमुख)
8. दंडाध्यक्ष (धार्मिक मामलों का प्रभारी)

आय का प्रमुख स्रोत भूमि से प्राप्त कर व राजस्व था। प्रत्येक किसान उपज का 2/5 वाँ भाग राज्य को कर के रूप में नकद देता था। वह दो कर वसूल करते थे संपूर्ण भूमि राजस्व का एक-चौथाई भाग जिसे चौथ कहते थे। उसका किसान राजा को भुगतान करते थे। शिवाजी के इन क्षेत्रों पर धावा न मारने के लिए कर वसूल किए। सरदेश मुखी एक अतिरिक्त कर जोकि भूमि राजस्व का 1/10 वाँ भाग था वह मराठों के प्रमुख को दिया जाता था।

2. मुगल साम्राज्य के पतन के कारण :

1. औरंगजेब की दक्कन नीति। वह बीजापुर और गोलकुंडा को विजय करना चाहता था। इसलिए उसने वहाँ के शासकों के

साथ लड़ाई में बहुत अधिक समय, धन एवं सैनिकों को झोंक दिया। मराठों, सिक्खों और जाटों ने भी मुगल साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह किया।

2. प्रांतों को नियंत्रित करने हेतु नियुक्त किए गए राज्यपाल बहुत शक्तिशाली हो गए। उनमें से अधिकांश ने प्रांतों में स्वतंत्र राज्य करना आरम्भ कर दिया। वे उसकी नियंत्रण शक्ति से बाहर हो गए थे।

3. औरंगजेब के उत्तराधिकारी बहुत कमजोर थे और वे संपूर्ण साम्राज्य की बागडोर सँभालने में सक्षम नहीं थे। उन्होंने विलासितापूर्ण जीवन को प्राथमिकता दी। इसलिए अन्य कुलीन व्यक्ति और अधिक शक्तिशाली हो गए।

4. विदेशी हमले भी मुगल साम्राज्य के पतन का कारण बने। नादिरशाह ने 1739 ई० में दिल्ली को लूटा। वह अपने साथ अमूल्य कोहिनूर हीरा एवं प्रसिद्ध मोर सिंहासन के साथ अपार धन दौलत ले गया।

## पाठ-1 : भारतीय संविधान का निर्माण

**क. सही विकल्प पर सही ( ✓ ) का चिह्न लगाओ-**

1. ये सभी
2. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को

**ख. रिक्त स्थान भरो -**

1. डॉ० बी० आर अंबेडकर
2. समान अधिकार प्राप्त
3. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-**

1. ✗
2. ✓
3. ✗

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. भारतीय संविधान भारत को एक समाजवादी अर्थव्यवस्था का राज्य बनाता है। भारत आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में समानता लाने के लिये निरन्तर प्रयासरत है, इसी अर्थव्यवस्था को समाजवाद कहते हैं।
2. संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर, 1946 को हुई।
3. जिस राज्य में उसका संविधान होता है, उसे गणराज्य कहते हैं।

**ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. **स्वतंत्रता** - भारतीय नागरिकों को विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म, उपासना एवं अपने व्यक्तित्व के पूर्ण विकास की स्वतंत्रता प्रदान की गई है।

   **समता** - समता का अर्थ है नागरिकों के संपूर्ण विकास के लिए समान अवसर उपलब्ध कराना। समता की धारणा जाति, प्रजाति, लिंग और धर्म के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव पर प्रतिबंध लगाती है। भारत का प्रत्येक नागरिक कानून के समक्ष समान है और उसे समान सुरक्षा देना सुनिश्चित किया गया है। समता के बिना स्वतंत्रता निरर्थक है।

2. **पथ-निरपेक्ष राज्य** - भारत में विभिन्न धर्मों के अनुयायी रहते हैं। एक पंथ निरपेक्ष राज्य व्यक्ति को धर्म की स्वतंत्रता देता है। इसका अर्थ है कि सभी धर्मों को एक समान आदर दिया जाता है। हमारे देश में सभी नागरिकों को, भले ही वे हिंदू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई अथवा पारसी हों, अपने धर्म का पालन करने एवं प्रचार करने का अधिकार है। राज्य धार्मिक आधार पर नागरिकों में मतभेद नहीं कर सकता। कानून की

दृष्टि में सभी धर्मों के नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त हैं।

3. **प्रजातांत्रिक राज्य** – भारतीय संविधान भारत को एक प्रजातांत्रिक राज्य बनाता है। भारत में सत्ता की वास्तविक बागडोर जनता के हाथों में है। जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि ही सरकार चलाते हैं। भारत के प्रत्येक 18 वर्षीय वयस्क नागरिक को मत देने का अधिकार प्राप्त है। भारत में सभी जातियों, धर्मों और सम्प्रदायों के वयस्क नागरिकों को चुनाव लड़ने का भी अधिकार प्राप्त है।

4. संपूर्ण प्रभुता संपन्न राज्य:–इसका अर्थ है कि हम अपने से संबंधित सभी मामलों में स्वयं जीने के लिए स्वतंत्र हैं। हम अपनी सरकार चलाने तथा अपनी विदेश नीति बनाने को स्वतंत्र है। हम अपने सभी आंतरिक एवं बाह्य मामलों में स्वयं निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हैं इसलिए उद्देशिका में हमारे देश का एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न राष्ट्र के रूप में उल्लेख किया गया है।

## च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. भारत का संविधान भारतीय लोगों के प्रतिनिधियों द्वारा लंबे विचार–विमर्श के बाद बनाया गया। संविधान बनाने वाली सभा जिसे 'संविधान सभा' कहते हैं, की पहली बैठक 9 दिसंबर, सन् 1946 को हुई। इसके सदस्यों में विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि, समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त महान स्वतन्त्रता सेनानी, न्यायविद् और विद्वान सम्मिलित थे। संविधान सभा के कुछ प्रमुख व्यक्ति थे:–पंडित जवाहर लाल नेहरू, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभभाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी और सरदार बलदेव सिंह ये सब महान राजनीतिक थे। इनके अतिरिक्त कुछ संविधान विशेषज्ञ, अलादी कृष्णास्वामी अय्यर, डॉ० बी० आर० अंबेडकर, श्री के०एम० मुंशी इसके सदस्य थे। श्रीमति सरोजनी नायडू और श्रीमति विजयलक्ष्मी पंडित इसकी महिला सदस्या थी। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद संविधान सभा के अध्यक्ष थे।

2. संविधान कानून का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है जो सरकार की मूल संरचना और इसके कार्यों को निर्धारित करता है, जिसके अनुसार देश पर शासन चलता है। प्रत्येक सरकार को संविधान में लिखें कानूनों के अनुसार कार्य करने होते हैं। संविधान देश के सभी अन्य कानूनों से श्रेष्ठ है। यह सर्वोच्च कानून है, जो सरकार के अंगों तथा नागरिकों के आधारभूत अधिकारों को परिभाषित एवं सीमांकित करता है।

**संविधान का महत्त्व :** प्रजातंत्र राष्ट्र और उसके नागरिकों के लिए संविधान का महत्त्व निम्न प्रकार होता है –

1. संविधान नागरिकों के मौलिक अधिकार तथा कर्त्तव्यों को निश्चित करता है।

2. संविधान सरकार के अंगों के अधिकारों एवं कार्यों को निश्चित करता है।

3. सरकार का स्वरूप एवं ढाँचा संविधान द्वारा ही बनाया जाता है।

4. संविधान सरकार को निरंकुश होने से रोकता है।

5. संविधान मौलिक अधिकारों को सुरक्षा प्रदान करता है।

6. देश का प्रशासन संविधान के नियमों के अनुरूप ही चलता है।

7. संविधान सरकार की जनता के प्रति जिम्मेदारी निश्चित करता है।

8. संविधान स्वतंत्रता, पथ निरपेक्षता और समाजवाद के आदर्शों को प्राप्त करने के लिए सरकार का मार्गदर्शन करता है।

3. संविधान सभा ने डॉ० बी०आर० अंबेडकर की अध्यक्षता में एक प्रारूप समिति का गठन किया। इसमें संविधान का प्रारूप तैयार करने में लगभग 3 वर्ष का समय लिया। नया संविधान, संविधान सभा द्वारा 26 नवंबर 1949 को अपनाया गया और यह 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ।

यही कारण है कि हम 26 जनवरी को प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस मनाते हैं।

भारत के संविधान की उद्देशिका इस प्रकार हैं:-

भारत के संविधान में भारत को संप्रभुत्ता संपन्न, समाजवादी पंथ निरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने का संकल्प लिया गया है। संविधान के इन मूलतत्त्वों के विषय में जानना आवश्यक हैं।

संपूर्ण प्रभुता संपन्न राज्य:-इसका अर्थ है कि हम अपने से संबंधित सभी मामलों में स्वयं जीने के लिए स्वतंत्र हैं। हम अपनी सरकार चलाने तथा अपनी विदेश नीति बनाने को स्वतंत्र है। हम अपने सभी आंतरिक एवं बाह्य मामलों में स्वयं निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हैं इसलिए उद्देशिका में हमारे देश का एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न राष्ट्र के रूप में उल्लेख किया गया है।

## पाठ–2 : राज्य सरकार

**क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–**

1. दो
2. राष्ट्रपति के
3. उड़ीसा
4. 25 वर्ष का
5. राज्य का मुख्य न्यायाधीश

**ख. रिक्त स्थान भरो –**

1. दीवालिया और पागल
2. राष्ट्रपति
3. विधान सभा
4. 25
5. हाई कोर्ट

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–**

1. ✓
2. ✓
3. ✓
4. ✓
5. ✗

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. राज्य सरकार का ढाँचा केन्द्र सरकार की तरह ही होता है। इसके तीन अंग होते है–
   1. राज्य विधायिका
   2. राज्य कार्यपालिका
   3. राज्य न्यायपालिका
2. केन्द्रशासित प्रदेश प्राय: आकार और जनसंख्या की दृष्टि से छोटे होते हैं। इसी कारण उन्हें राज्य का दर्जा नहीं दिया जाता। केन्द्रशासित प्रदेशों में सीधे केन्द्र सरकार का प्रशासन होता है।
3. विधान परिषद के कुल सदस्य विधाान सभा के कुल सदस्यों की संख्या के 1/3 भाग होते हैं परंतु ये 40 से कम नहीं हो सकते। इन सदस्यों को विधायक (एम०एल०ए०) कहते हैं।
4. चुनावों के पश्चात् बहुमत से जीतने वाला दल अपने नेता का चुनाव करता है जो कि मुख्यमंत्री बनता है।

**ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –**

1. विधान सभा चुनाव लड़ने के लिए आवश्यक शर्तें –
   1. वह भारत का नागरिक हो।
   2. उसकी आयु 25 वर्ष अथवा अधिक होनी चाहिए।
   3. वह दिवालिया तथा पागल न हो।
   4. वह कोई सरकारी कर्मचारी नहीं होना चाहिए।
   5. वह संबंधित राज्य की मतदाता सूची में नामांकित होना चाहिए।

2. विधान परिषद के कुल सदस्य विधान सभा के कुल सदस्यों की संख्या के 1/3 भाग होते हैं परन्तु ये 40 से कम नहीं हो सकते। इन सदस्यों को विधायक (एम०एल०ए०) कहते हैं। इसका संगठन निम्न प्रकार है–

   1. विधान परिषद के 1/3 भाग सदस्यों का चुनाव स्थायी निकायों जैसे नगरपालिकाओं और जिला पंचायतों (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड) से किया जाता है।
   2. 1/3 भाग सदस्यों का चुनाव विधान सभा से किया जाता है।
   3. 1/12 भाग सदस्यों का चुनाव राज्य के स्नातकों से किया जाता है।
   4. 1/12 भाग सदस्यों का चुनाव राज्य के माध्यमिक विद्यालयों, डिग्री कॉलेजों तथा विश्वविद्यालय के प्रवक्ताओं, रीडरों और प्रोफेसरों से किया जाता है।
   5. 1/6 भाग सदस्यों को संबंधित राज्य का राज्यपाल सामाजिक कार्यकर्ताओं आदि में से मनोनीत करता है।

3. विधायिका को विधान सभा भी कहते हैं। विधान सभा के सभी सदस्यों का चुनाव राज्य के मतदाताओं द्वारा किया जाता है। निर्वाचन सभा राज्य की जनसंख्या पर आधारित होती है। प्रत्येक राज्य क्षेत्रों में बँटा होता है, जिन्हें निर्वाचन क्षेत्र कहते हैं।

4. निर्वाचन सभा राज्य की जनसंख्या पर आधारित होती है। प्रत्येक राज्य क्षेत्रों में बँटा होता है, जिन्हें निर्वाचन क्षेत्र कहते हैं।

**च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –**

1. केन्द्रशासित प्रदेश प्रायः आकार और जनसंख्या की दृष्टि से छोटे होते हैं। इसी कारण उन्हें राज्य का दर्जा नहीं दिया जाता। केन्द्रशासित प्रदेशों में सीधे केन्द्र सरकार का प्रशासन होता है। केन्द्रशासित प्रदेश का प्रशासन राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त प्रशासनिक अधिकारी द्वारा चलाया जाता है। इस प्रशासनिक अधिकारी को मुख्य आयुक्त अथवा उपराज्यपाल कहते हैं।

   किसी केन्द्रशासित प्रदेश में विधान सभा तथा मुख्यमंत्री के नेतृत्व में मंत्रि परिषद् हो सकती हैं।

   केन्द्रशासित प्रदेश दिल्ली को विशेष दर्जा प्राप्त है। इसे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र कहा जाता है। उपराज्यपाल इसका प्रशासनिक मुखिया है। यहाँ एक निर्वाचित विधान सभा तथा मंत्रिपरिषद् भी है।

2. चुनावों के पश्चात् बहुमत से जीतने वाला दल अपने नेता का चुनाव करता है जो कि मुख्यमंत्री बनता है। राज्यपाल विधान

सभा में सबसे बड़े दल जो बहुमत से विजयी हो, के नेता को सरकार बनाने का निमंत्रण देता है। बहुमत न होने पर तब एक साँझा सरकार या मिली-जुली सरकार बनाई जा सकती है। उसके नेता को मुख्यमंत्री कहते हैं उसकी नियुक्ति राज्यपाल करता है। वह उन्हें पद तथा गोपनीयता की शपथ दिलाता है। मुख्यमंत्री एक मंत्री परिषद् बनाता है, उसे भी राज्यपाल ही शपथ दिलाता है। मुख्यमंत्री की शक्तियाँ और कार्य -

1. वह राज्य मंत्रिमण्डल का मुखिया है।
2. राज्यपाल उसके मंत्रिपरिषद के सदस्यों की नियुक्ति तथा पद्च्युति उसके परामर्श पर ही करता है।
3. वह मंत्रिमण्डल की बैठकों की अध्यक्षता करता है तथा मंत्रिपरिषद पर नियंत्रण रखता है।
4. वह अपने राज्य की कार्यकारिणी और प्रशासन नीतियों का निर्धारण करता है।
5. वह राज्यपाल और मंत्रिमण्डल के बीच मध्यस्थ का कार्य करता है।
6. वह अपने मंत्रियों को विभिन्न विभागों (मंत्रालयों) का बँटवारा करता है।
7. वह कार्यपालिका का वास्तविक प्रधान है।
8. वह राज्य के प्रमुख अधिकारियों की नियुक्ति के संदर्भ में गवर्नर को सलाह भी देता है।

## पाठ-3 : केन्द्रीय सरकार

**क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-**

1. ये सभी
2. ये दोनों
3. 12

**ख. रिक्त स्थान भरो -**

1. राष्ट्रपति
2. महाअभियोग
3. 550
4. अप्रत्यक्ष
5. 250

**ग. मिलान करो -**

1. छः वर्ष
2. कम-से-कम 25 वर्ष
3. 550
4. 250

**घ. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-**

1. ✓ 2. ✗
3. ✓ 4. ✗
5. ✗

**घ. लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. लोक सभा सदस्य के लिए कुछ जरूरी योग्यताएँ -
   1. वह भारत का नागरिक हो।
   2. वह 25 वर्ष से कम आयु का न हो।
   3. वह केन्द्र या राज्य सरकार में किसी लाभ के पद पर न हो।
   4. वह न्यायालय द्वारा अपराधी, पागल या दिवालिया घोषित न किया गया हो।
   5. उसका नाम मतदाता सूची में हो।
   6. वह मानसिक रोगी न हो।
2. भारत की न्यायपालिका एकीकृत न्यायपालिका है जिसमें सबसे ऊपर राष्ट्रीय स्तर पर उच्चतम न्यायालय या सर्वोच्च न्यायालय, मध्य में राज्य स्तर पर उच्च न्यायालय तथा उसके नीचे से जिला स्तर पर जिला न्यायालय होते हैं। न्याय प्रणाली में सबसे निम्नतम स्तर पर (ग्रामीण स्तर पर) न्याय पंचायत होती है। औपचारिक अदालतों के अतिरिक्त कुछ अनौपचारिक अदालतें जैसे- लोक अदालत भी होती हैं जहाँ झगड़ों का निपटारा बिना किसी कानूनी औपचारिकता, आपसी सहमति और समझदारी से होता है।
3. **आपातकालीन शक्तियाँ** - आपातकाल में राष्ट्रपति अपनी विशेष शक्तियों का प्रयोग करता है। निम्न दशाओं में राष्ट्रपति आपातकाल की घोषणा कर सकता है:-
   1. देश में जब वित्तीय संकट की स्थिति हो।
   2. किसी राज्य में अस्थिरता होने पर।
   3. जब देश पर बाह्य आक्रमण अथवा गृह-युद्ध की वजह से देश की शांति व सुरक्षा को खतरा हो।
4. संसद का ऊपरी सदन होता है राज्य सभा। राज्स सभा में 250 सदस्य होते हैं जिसमें से 238 सदस्य राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशों द्वारा चुने जाते हैं तथा 12 सदस्य राष्ट्रपति नामांकित करता है। नामांकित सदस्य साहित्य, विज्ञान तथा सामाजिक सेवाओं आदि क्षेत्रों में प्रसिद्ध होते हैं।

## ङ. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. लोक सभा को निम्न सदन यानि संसद का निचला सदन कहते हैं यह जनता के प्रतिनिधित्वों का क्षेत्र हैं। इसमें सदस्यों की संख्या जो जनता द्वारा चुने जाते हैं। इसमें अधिकतम 550 सदस्य होते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से 'वयस्क मताधिकार द्वारा, नागरिकों द्वारा चुने जाते हैं। इनमें से अधिकतम 20 सीटें केन्द्रशासित प्रदेशों के लिए निर्धारित होती हैं तथा 2 सदस्य एग्लों-इंडियन समुदाय से (राष्ट्रपति द्वारा) होते हैं। लोक सभा के अध्यक्ष को स्पीकर कहा जाता है जिसका चुनाव लोक सभा के सदस्यों द्वारा किया जाता है। लोक सभा का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है और आपातकालीन स्थिति में यह बढ़ाया भी जा सकता है। साथ ही प्रधानमंत्री के विरुद्ध लोक सभा में अविश्वास प्रस्ताव पारित करने पर इसे पाँच वर्षों से पूर्व भंग भी किया जा सकता है। लोक सभा में एक अध्यक्ष तथा एक उपाध्यक्ष होता है।

   लोक सभा सदस्य के लिए कुछ जरूरी योग्यताएँ –

   1. वह भारत का नागरिक हो।
   2. वह 25 वर्ष से कम आयु का न हो।
   3. वह केन्द्र या राज्य सरकार में किसी लाभ के पद पर न हो।
   4. वह न्यायालय द्वारा अपराधी, पागल या दिवालिया घोषित न किया गया हो।
   5. उसका नाम मतदाता सूची में हो।
   6. वह मानसिक रोगी न हो।

2. **राष्ट्रपति की शक्तियाँ व कार्य** –

   **वित्तीय शक्ति** – राष्ट्रपति की आज्ञा के बिना संसद में कोई बजट प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए केवल राष्ट्रपति ही आपातकालीन कोष से धन की व्यवस्था करता है।

   **विधायी शक्तियाँ** – संसद का पहला सत्र हमेशा राष्ट्रपति के द्वारा ही संबोधित किया जाता है। संसद भंग करने का अधिकार भी राष्ट्रपति के पास ही होता है। कोई भी कानून राष्ट्रपति की सहमति के बिना नहीं बन सकता। युद्ध की घोषणा भी राष्ट्रपति के द्वारा ही होती है।

   **न्यायिक शक्ति** – किसी सजा प्राप्त व्यक्ति की सजा माफ या कम करने का अधिकार भी राष्ट्रपति के पास होता है।

**कार्यपालिका शक्ति** – भारतीय संघ का मुख्य कार्यकारी राष्ट्रपति है। वह ही प्रधानमंत्री व अन्य मंत्रियों को नियुक्त करता है। राष्ट्रपति राज्यों के राज्यपालों, एटार्नी जनरल, लेफ्टिनेट गवर्नर, चीफ कमिश्नरों, सर्वोच्च एवं उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों की भी नियुक्ति करता है। राष्ट्रपति तीनों सेनाओं का सेनापति होता है। वह विदेशी राजदूतों का स्वागत भी करता है। विदेशों से हुई संधियों पर भी राष्ट्रपति ही हस्ताक्षर करता है।

**आपातकालीन शक्तियाँ** – आपातकाल में राष्ट्रपति अपनी विशेष शक्तियों का प्रयोग करता है। निम्न दशाओं में राष्ट्रपति आपातकाल की घोषणा कर सकता है:–

1. देश में जब वित्तीय संकट की स्थिति हो।
2. किसी राज्य में अस्थिरता होने पर।
3. जब देश पर बाह्य आक्रमण अथवा गृह-युद्ध की वजह से देश की शांति व सुरक्षा को खतरा हो।

3. केन्द्रीय सरकार या केन्द्रशासित सरकार में संसद, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा मंत्रिपरिषद् होते हैं। अन्य किसी सरकार की भाँति भारत सरकार के तीन अंग हैं– विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका। कानून निर्माण करने वाली सर्वोच्च संस्था को विधायिका कहा जाता है। हमारे देश में केन्द्रीय तथा राज्य दोनों स्तरों पर कानूनों का निर्माण होता है। केन्द्रीय स्तर पर कानून बनाने वाली संस्था को 'संसद' कहते हैं। भारत में राष्ट्रपति, लोक सभा तथा राज्य सभा मिलकर संसद का निर्माण करते हैं। एक विधेयक तभी कानून बनाता है जब वह दोनों सदनों द्वारा स्वीकृत करने के पश्चात् राष्ट्रपति द्वारा भी स्वीकृत कर दिया जाता है। ये कानून राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा मंत्रिपरिषद् द्वारा संपादित होते हैं। सरकार का वह अंग जो कानून को परिभाषित करता है तथा कानून के अनुसार झगड़े सुलझाता है न्यायपालिका कहलाती है। सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय तथा अन्य सभी निचले न्यायालय मिलकर न्यायपालिका बनाते हैं।

## पाठ–4 : मीडिया और विज्ञापन

**क. सही विकल्प पर सही ( ✓ ) का चिह्न लगाओ–**

1. लोकतंत्र
2. 1927 ई०
3. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया
4. 1760 ई०

**ख. रिक्त स्थान भरो –**

1. समाज, सरकार
2. 1700

3. खबर लहरिया 4. 29 जनवरी 1780

5. ज्ञाप

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-**

1. ✓ 2. ✓

3. ✓ 4. ✗

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. विज्ञापन चार प्रकार के होते हैं-
   1. सामाजिक विज्ञापन
   2. स्थानीय विज्ञापन
   3. राजनीतिक विज्ञापन
   4. व्यवसायिक विज्ञापन
2. मीडिया दो प्रकार का होता है-
   1. इलेक्ट्रोनिक मीडिया
   2. प्रिंट मीडिया
3. मीडिया को लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है।
4. विज्ञापन के विभिन्न माध्यम निम्नलिखित है-
   1. रेडियों एवं टेलीविजन
   2. फिल्म के बीच-बीच में विज्ञापन
   3. समाचार पत्र और मैगजीन
   4. विज्ञापन बोर्ड
   5. इश्तिहार एवं झण्डे
   6. कार्यक्रमों का प्रायोजन
5. मीडिया की सीमाएँ निम्न हैं-
   1. मीडिया लोकतंत्र मे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है परंतु इसकी अपनी कुछ मर्यादाएँ है।
   2. इसको सत्य तथ्यों पर आधारित सूचनाएँ देनी चाहिए।
   3. इसे सूचनाओं एवं समाचारों का तोड़-मरोड़कर मिथ्या वर्णन नहीं करना चाहिये।

**ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. विज्ञापन की विधियाँ -
   1. रेडियो एवं टेलीविजन
   2. फिल्म के बीच-बीच में विज्ञापन

3. समाचार पत्र और मैगजीन
4. विज्ञापन बोर्ड।
5. इश्तिहार एवं झंडे।
6. कार्यक्रमों का प्रायोजन।

2. मास मीडिया समाचारों और कार्यक्रमों को प्रचारित और प्रसारित करने के लिए विभिन्न प्रकार की तकनीकों जैसे विद्युत, ध्वनि रिकार्डों, ट्रांसमिशन उपग्रहों तथा मानव शक्ति जैसे समाचार–वाचक, कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले आदि का प्रयोग करता है। इन सब पर मीडिया को ढेर सारा धन खर्च करना पड़ता है। मीडिया टीवी पर विशेष ब्रांड वाली विभिन्न वस्तुओं जैसे कार, वस्त्र, पेन, कोल्ड ड्रिंक, चॉकलेट, मोबाइल फोन, साबुन, वाशिंग पाउडर आदि के विज्ञापन देता है जिससे उसे अच्छी प्राप्ति होती है।

3. **राजनीतिक विज्ञापन** – चुनाव के दौरान विभिन्न राजनीतिक दल एवं नेता विज्ञापन का सहारा लेते हैं। वे समाचार पत्रों के पोस्टरों, दीवार लेखन, टीवी, रेडियो, पटल आदि का विज्ञापन हेतु प्रयोग करते हैं।

   ये राजनीतिक विज्ञापन लोगों को राजनीतिक गतिविधियों से अवगत कराते हैं। वे अपने विचारों व उद्देश्यों की तय नीतियों को विज्ञापन के माध्यम से हम तक पहुँचाते हैं।

4. व्यावसायिक – विज्ञापन ऐसे विज्ञापन है जो एक उत्पाद की उपलब्धता अथवा उत्पाद की जानकारी देते हैं, व्यावसायिक विज्ञापन कहलाते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य उत्पाद की बिक्री एवं माँग बढ़ाना होता है।

   उपभोक्ताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए विज्ञापनों को विभिन्न प्रकार के मॉडलों और रंगों में सजाकर समाचार पत्रों तथा टीवी आदि में दिया जाता है। उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों को पेटेन्ट ब्रांडों के अंतर्गत विज्ञापित किया जाता है।

**च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न** –

1. मीडिया एक प्रजातांत्रिक देश में मीडिया एक उल्लेखनीय और अतिमहत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह लोगों को सरकारी कार्यक्रमों और नीतियों से अवगत कराता है। यदि लोग इन कार्यक्रमों और नीतियों को पसंद नहीं करते हैं तो वे प्रश्न पूछकर, संबंधित अधिकारी या मंत्री को पत्र लिखकर, समाचार पत्रों में आर्टिकल लिखकर, हस्ताक्षर अभियान चलाकर आदि के द्वारा अपना विरोध प्रकट कर सकते हैं। जब मीडिया की खबरें

जनता, सरकार या अन्य एजेंसी किसी से नियंत्रित या प्रभावित नहीं होतीं तो इसे स्वतंत्र मीडिया कहते हैं।

**मीडिया की तकनीकियाँ** – मीडिया के साधनों में रेडियो, टेलीविजन, अखबार, सिनेमाघर, मॉल आदि प्रमुख हैं। टीवी, रेडियो तथा कम्प्यूटर स्क्रीन पर संचालित होने वाली इंटरनेट प्रणाली बिजली से चलती है इसीलिए इन्हें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कहते हैं। यह खबरों और घटनाओं को न केवल टीवी या कम्प्यूटर पर दिखाता है बल्कि उसका शब्दों में वर्णन भी करता है। समाचार पत्र और पत्रिकाएँ देश-विदेश की खबरों को बड़े पैमाने पर प्रकाशित करते हैं जिसे प्रिंट मीडिया कहते हैं।

**विज्ञापन** – वह प्रक्रिया, जो लोगों का ध्यान वस्तुओं, सेवाओं, विचारों आदि की ओर आकृष्ट करती है, विज्ञापन कहलाती है। विज्ञापन के मुख्य साधन मीडिया, टीवी, इंटरनेट, सिनेमाघर, मॉल, पत्रिकाएँ, वाहन, दीवार लेख, रेडियो, पम्फलेट तथा स्टीकर आदि हैं। कम्प्यूटर के इंटरनेट पर विभिन्न वेबसाइटों पर अनेक प्रकार के विज्ञापन भरे रहते हैं। यह वृहद् संचार व्यवस्था का सबसे अच्छा साधन है।

2. 1. विज्ञापन लोगों में ज्ञान की जागरुकता बढ़ाता है।
   2. विज्ञापन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोगों का ध्यान उत्पादों, वस्तुओं, सेवाओं और विचारों की ओर आकर्षित किया जाता है। विज्ञापन दो प्रकार के होते हैं–सामाजिक और व्यावसायिक। सामाजिक विज्ञापन सामाजिक बुराइयों के प्रति लोगों को जागरूक करते हैं जबकि व्यावसायिक विज्ञापन उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री को बढ़ावा देते हैं।
   3. विज्ञापनों के माध्यम से उत्पाद बिक्री के प्रोत्साहन को उपभोक्ता विज्ञापनीकरण कहते हैं।

## पाठ–5 : स्वास्थ्य में सरकार की भूमिका

**क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–**

1. ये सभी
2. 15,000
3. भारत
4. ये सभी
5. निजी अस्पताल में

**ख. रिक्त स्थान भरो –**

1. मस्तिष्क
2. 20
3. 11,174, 18218
4. आधारभूत सरंचना
5.

**ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-**

1. ✗ 2. ✓
3. ✗ 4. ✓
5. ✓

**घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. स्वास्थ्य से आशय है कि हमारा किसी भी प्रकार की बीमारियों एवं चोटों से मुक्त रहना। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार पूर्णतः शारिरिक, मानसिक एवं सामाजिक तंदरुस्त, न सिर्फ बीमारी एवं दौर्बल्य मुक्त होना स्वास्थ्य है।
2. निजी स्वास्थ्य केन्द्रों द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली सुविधाओं जैसे:- प्रयोगशालाएँ, एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड, चुंबकीय अनुनाद इमेजिंग (एम०आर०आई०) आदि के कारण लोगों में इनकी माँग तेजी से बढ़ रही हैं।
3. भारत विश्व का चौथा सबसे बडा दवा निर्माता एवं निर्यातक है।
4. भारत में मलेरिया के लगभग 20 लाख मामले प्रतिवर्ष दर्ज होते हैं।

**ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -**

1. एक लोकतांत्रिक देश की सरकार अपनी जनता के कल्याण हेतु कार्य करती हैं। जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सड़कों के विकास, बिजली एवं स्वच्छ जल संबंधी कार्य सम्मिलित हैं।

   स्वास्थ्य से आशय है कि हमारा किसी भी प्रकार की बीमारियों एवं चोटों से मुक्त रहना। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, पूर्णतः शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक तंदुरुस्त, न सिर्फ बीमारी एवं दौर्बल्य मुक्त होना स्वास्थ्य है।

   देश के जल संसाधनो के विकास और विनियमन के लिए दिशा निदेशों और कार्यक्रमों को बनाने के लिए ''जल संसाधन मंत्रालय'' जिम्मेदार है। पेयजल के लिए गुणवत्ता विनिर्देशन, बाढ़, सूखा, पानी का सूंदषण आदि जैसे पानी से संम्बंधित समस्याओं के बारे में जानकारी दी गई है।
2. राज्य सरकार भी स्वास्थ्य केन्द्र चलाती है जो ग्रामीण क्षेत्रों में लाभ पहुँचाते हैं। प्रत्येक राज्य, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM) संस्था के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छी गुणवत्ता के स्वास्थ्य सेवाओं व सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध होता है। गाँवों में जिनकी आबादी 1250-1500 के बीच हो ग्रामीण स्वास्थ्य एवं सफाई सुविधा समिति बनाई जाती है। प्रत्येक समिति को रुपये 10,000 प्रतिवर्ष का अनुदान राज्य

सरकार से प्राप्त होता है जिसको गाँव के निरीक्षण, राय, कैंप, सफाई अभियान, स्वच्छ जल व जल-सुधार आदि कार्यों में लगाया जाता है। जलाशयों की सफाई बहुत आवश्यक होती है क्योंकि अधिकांश बीमारियाँ पीने के स्वच्छ जल की पूर्ति के न होने से फैलती है।

3. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने सन् 1948 में स्वास्थ्य या आरोग्य की निम्नलिखित परिभाषा दी गई है-

दैहिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्णत: स्वास्थ्य होना (समस्या विहीन होना) ही स्वास्थ्य है।

डब्ल्यू०एच०ओ० ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणाली की क्षमता को मापने और निगरानी के लिए विभिन्न उपकरण प्रकाशित किए है और स्वास्थ्य कार्यबल ग्लोबल हेल्थ आब्जर्वेटरी (जी०एच०ओ०) डब्ल्यू०एच०ओ० का मुख्य पोर्टल रहा है। जो दुनिया भर में स्वास्थ्य स्थितियों की निगरानी करके प्रमुख स्वास्थ्य विषयों के लिए डेटा और विश्लेषण प्रदान करता है।

4. अधिकांश लोग अतिसार, कीड़ों, हैपेटाइटिस आदि रोगों से पीड़ित रहते हैं। ये रोग सामान्य हैं जो जल जनित हैं, क्योंकि सरकार सभी के लिए स्वच्छ जल की व्यवस्था करने में समर्थ नहीं है।

## च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा केन्द्र सरकार द्वारा चलाए जाने वाले स्वास्थ्य केन्द्रों की एक कड़ी होती हैं, जो आपस में जुड़े होते हैं और वे ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएँ व सुविधाएँ प्रदान करते हैं। इनके माध्यम से अधिकांशत: प्रत्येक सामान्य बीमारी का इलाज विशिष्ट सेवाओं द्वारा प्रदान किया जाता है। ग्राम स्तर पर प्रत्येक जिले में एक स्वास्थ्य चिकित्सालय होता है जिनमें सक्षम व कुशल डॉक्टर व नर्सें उपलब्ध होती हैं। इन्हें सामान्य बीमारियों के इलाज के लिए प्रशिक्षण प्राप्त होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे केन्द्र कई गाँवों की आवश्यकताएँ पूरी करते हैं तथा जिला स्तर का अस्पताल इन सभी केन्द्रों की देखभाल व नियंत्रण करता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य केन्द्र अन्य महत्त्वपूर्ण बीमारियों जैसे:- टी.बी., पोलियो, मलेरिया, डेंगू व अतिसार आदि को फैलने से रोकने, संविधान के अनुसार लोगों के हितों को सुनिश्चित करने तथा सभी को स्वास्थ्य सेवाएँ समय पर प्रदान करने की जिम्मेदारियाँ निभाते हैं।

राज्य सरकार भी स्वास्थ्य केन्द्र चलाती है जो ग्रामीण क्षेत्रों में लाभ पहुँचाते हैं। प्रत्येक राज्य, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM) संस्था के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छी गुणवत्ता के

स्वास्थ्य सेवाओं व सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध होता है। गाँवों में जिनकी आबादी 1250–1500 के बीच हो ग्रामीण स्वास्थ्य एवं सफाई सुविधा समिति बनाई जाती है। प्रत्येक समिति को रुपये 10,000 प्रतिवर्ष का अनुदान राज्य सरकार से प्राप्त होता है जिसको गाँव के निरीक्षण, राय, कैंप, सफाई अभियान, स्वच्छ जल व जल–सुधार आदि कार्यों में लगाया जाता है। जलाशयों की सफाई बहुत आवश्यक होती है क्योंकि अधिकांश बीमारियाँ पीने के स्वच्छ जल की पूर्ति के न होने से फैलती है।

2. हमारा संविधान प्रत्येक राज्य को प्रत्येक नागरिक के स्वास्थ्य का ध्यान रखने की सलाह देता है। भारत में स्वास्थ्य केन्द्रों की जिम्मेदारी प्रत्येक राज्य सरकार की है। कुछ निजी स्वास्थ्य केन्द्र भी यह सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं। भारत में स्वास्थ्य सेवा

1. विश्व की तुलना में भारत में सर्वाधिक चिकित्सा महाविद्यालय है। जिनमें लगभग 15000 से भी अधिक नए चिकित्सक (डॉक्टर) तैयार होते हैं।
2. जहाँ 1991 में स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या 11,174 थी वह 2008 में बढ़कर 18,218 हो गई थी।
3. भारत विश्व का चौथा सबसे बड़ा दवा निर्माता एवं निर्यातक है।
4. विश्व के कौने–कौने से भारत में विदेशी मरीज इलाज कराने के लिए आते हैं क्योंकि यहाँ के कुछ विशिष्ट अस्पतालों की तुलना विश्व के सर्वश्रेष्ठ अस्पतालों से की जाती है।

**भारत में स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित कठिनाईयाँ**

1. भारत के अधिकांश चिकित्सक शहरी प्रदेशों में रहते हैं तथा ग्रामीणों को उन तक आने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती हैं। गाँवों में इन डॉक्टरों की संख्या आवश्यकता से कहीं कम है।
2. भारत में बच्चों को भरपेट खाने की कमी के कारण पोषण की कमी का सामना करना पड़ता है।
3. लगभग 20 लाख मलेरिया के मामले प्रतिवर्ष दर्ज होते हैं।
4. अधिकांश लोग अतिसार, कीड़ों, हैपेटाइटिस आदि रोगों से पीड़ित रहते हैं। ये रोग सामान्य हैं जो जल जनित हैं, क्योंकि सरकार सभी के लिए स्वच्छ जल की व्यवस्था करने में समर्थ नहीं है।